RNI No. UPHIN/2000/03766 ISSN No. 2581-3528 ₹ : 20

केशव संवाद

1 मार्च-2026

मेरठ की रफ्तार विकसित भारत का आधार

फाल्गुन/चैत्र

वि.सं. २०८२

शक सं. १९४७

मार्च २०२६

वसंत ऋतु

रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
प्रदोष व्रत १ फाल्गुन शुक्ल पक्ष त्रयोदशी	होलिका दहन २ फाल्गुन शुक्ल पक्ष चतुर्दशी	चन्द्र ग्रहण ३ फाल्गुन शुक्ल पक्ष पूर्णिमा	होली ४ चैत्र कृष्ण पक्ष प्रतिपदा	संत तुकाराम जयंती ५ चैत्र कृष्ण पक्ष द्वितीया	श्री गणेश चतुर्थी व्रत ६ चैत्र कृष्ण पक्ष तृतीया	७ चैत्र कृष्ण पक्ष चतुर्थी
रंग पंचमी ८ चैत्र कृष्ण पक्ष पंचमी	९ चैत्र कृष्ण पक्ष षष्ठी	१० चैत्र कृष्ण पक्ष सप्तमी	शीतला अष्टमी (बसोड़ा) ११ चैत्र कृष्ण पक्ष अष्टमी	१२ चैत्र कृष्ण पक्ष नवमी	१३ चैत्र कृष्ण पक्ष दशमी	मौन संक्रान्ति १४ चैत्र कृष्ण पक्ष एकादशी
पापमोचिनी एकादशी व्रत १५ चैत्र कृष्ण पक्ष एकादशी	प्रदोष व्रत १६ चैत्र कृष्ण पक्ष द्वादशी	१७ चैत्र कृष्ण पक्ष त्रयोदशी	१८ चैत्र कृष्ण पक्ष चतुर्दशी	नव संवत्सर आरम्भ २०८३ १९ चैत्र कृष्ण/शुक्ल पक्ष अमा./प्रति.	२० चैत्र शुक्ल पक्ष द्वितीया	मत्स्यावतार, गणगौर २१ चैत्र शुक्ल पक्ष तृतीया
२२ चैत्र शुक्ल पक्ष चतुर्थी	२३ चैत्र शुक्ल पक्ष पंचमी	२४ चैत्र शुक्ल पक्ष षष्ठी	२५ चैत्र शुक्ल पक्ष सप्तमी	२६ चैत्र शुक्ल पक्ष अष्टमी	२७ चैत्र शुक्ल पक्ष नवमी	२८ चैत्र शुक्ल पक्ष दशमी
२९ चैत्र शुक्ल पक्ष एकादशी	३० चैत्र शुक्ल पक्ष द्वादशी	३१ चैत्र शुक्ल पक्ष त्रयोदशी				

केशव संवाद

RNI No. UPHIN/2000/03766

ISSN No. 2581-3528

1 मार्च, 2026

वर्ष : 26 अंक : 03

सलाहकार समिति

उदयभान सिंह, रविन्द्र सिंह चौहान
रविन्द्र कुमार श्रीवास्तव, मुकेश कुमार

संपादक

कृपाशंकर

कार्यकारी संपादक

प्रोफेसर (डॉ.) नीलम कुमारी

प्रबंध निदेशक

डॉ. अनिल कुमार निगम

प्रबंध संपादक

पंकज राणा

पृष्ठ संयोजन

वीरेंद्र पोखरियाल

संपादकीय कार्यालय

प्रेरणा शोध संस्थान न्यास
सी-56/20 सेक्टर-62, नोएडा -201309
फोन न. 0120 4565851
ईमेल : keshavsamvad@gmail.com
वेबसाइट : www.prernasamvad.in

स्वामी पंकज कुमार की ओर से मुद्रक/प्रकाशक रमन चावला द्वारा चन्द्र प्रभु ऑफसेट प्रिंटिंग वर्क प्रा.लि. नोएडा से मुद्रित तथा केशव भवन 105 आर्यनगर सूरजकुंड रोड मेरठ से प्रकाशित

इस पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। संपादक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का निपटारा मेरठ की सीमा में आने वाली सक्षम अदालतों/फोरम में मान्य होगा। संपादक

विषय सूची

मेरठ कार्यक्रम झलकिंया.....05

मेरठ की रफ्तार : विकसित भारत का आधार.....07

उत्तर प्रदेश की सुर्खियां.....09

दिल्ली-एनसीआर की शीर्ष समाचार सुर्खिया.....11

हिन्दुत्व और राष्ट्रीय पहचान.....12

विश्व बंधुत्व और कल्याण के मार्ग का सूत्र है हिंदुत्व.....14

पंच परिवर्तन.....16

आनुषांगिक संगठन.....17

सरसंघचालक ध्येय वाक्य.....18

कथन.....19

'शतक' विचार, विरासत और राष्ट्रभाव की सिनेमाई गाथा'.....20

बुद्धिमान मशीनें, निर्णायक भविष्य.....21

एआई इम्पैक्ट सम्मिट की विजेता सृष्टि श्रीवास्तव और इन्फीहील की प्रेरक उड़ान.....22

मिजारेम : स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत की बढ़ती सीमाओं में संघर्ष.....23

रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भर भारत को दिशा देता वर्तमान रक्षा बजट.....24

महान क्रांतिकारी.....25

पर्यावरण.....29

आत्मनिर्भरता.....30

लव जिहाद.....31

कहानी.....33

बाल कहानी : धन नहीं चरित्र महान.....34

पाठकगण पत्रिका के बारे में अपने सुझाव एवं प्रतिक्रिया,'संपादक के नाम पत्र' शीर्षक से ई-मेल (keshavsamvad@gmail.com) के माध्यम से भेज सकते हैं। चुने हुए पत्रों को पत्रिका के अगले अंक में प्रकाशित किया जायेगा।

परंपरा, पुरुषार्थ और प्रगति : विकसित भारत का संकल्प

भारत ज्ञान, तप और त्याग की उस अनादि परंपरा का देश रहा है, जहाँ ऋषियों की वाणी से वेद गुंजायमान हुए, मुनियों की साधना से लोकमंगल का मार्ग प्रशस्त हुआ और संतों की करुणा से विश्वबंधुत्व का संदेश प्रस्फुटित हुआ। इसी पावन भूमि ने स्वामी विवेकानंद, स्वामी दयानंद सरस्वती और महर्षि अरविंद जैसे महापुरुषों को जन्म दिया, जिन्होंने भारत की आत्मा और सांस्कृतिक चेतना को पहचानते हुए विश्व को आध्यात्मिक आलोक प्रदान किया।

समकालीन भारत में सांस्कृतिक चेतना नूतन रूप में तब दृष्टिगोचर होती है जब योगी आदित्यनाथ भगवा वेश में वैश्विक मंचों पर भारतीय परंपरा का प्रतिनिधित्व करते हैं। यह केवल एक राजनेता की यात्रा नहीं, बल्कि भारतीय सनातन चेतना का सजीव प्रतीक है जो यह संदेश देता है कि नया भारत अपनी जड़ों से जुड़कर ही विश्व से संवाद कर रहा है।

"उद्यमेन हि सिद्धयन्ति कार्याणि न मनोरथैः।

न हि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः"

यह हमें बताता है कि संकल्प तभी सिद्ध होता है जब उसके साथ पुरुषार्थ जुड़ा हो। आज का भारत इसी पुरुषार्थ का प्रतीक बनकर उभर रहा है। राष्ट्र निर्माण की इसी साधना में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की शताब्दी यात्रा 'चरैवेति, चरैवेति' मंत्र के साथ व्यक्ति निर्माण से राष्ट्र निर्माण की ओर अग्रसर है। यह यात्रा विकसित भारत के स्वप्न को साकार करने के साथ-साथ भारतीय सभ्यता और संस्कृति की पुनर्स्थापना का भी महत्त्वपूर्ण प्रयास है।

आज का भारत 'आत्मनिर्भरता' के पथ पर दृढ़ता से अग्रसर है। यह आत्मनिर्भरता केवल आर्थिक स्वावलंबन का नहीं, बल्कि सांस्कृतिक आत्मबोध का भी प्रतीक है। "वसुधैव कुटुम्बकम्" केवल एक आदर्श नहीं, बल्कि भारत की जीवन दृष्टि है, जो आज वैश्विक संवाद का आधार बन रही है।

विकास की यह यात्रा केवल विचारों तक सीमित नहीं है, यह धरातल पर भी साकार हो रही है। उत्तर प्रदेश की स्पोर्ट्स सिटी के रूप में प्रसिद्ध मेरठ में प्रारंभ हुई रैपिड रेल आधुनिक भारत की गति और प्रगति का प्रतीक है। इसी प्रकार सहारनपुर में कान्हा गौशाला द्वारा निर्मित गोमय गुलाल जैसी पहलें यह दर्शाती हैं कि परंपरा और पर्यावरण चेतना का सुंदर समन्वय संभव ही नहीं, बल्कि आवश्यक भी है।

"माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः"— यह भावना हमें प्रकृति के प्रति उत्तरदायित्व का बोध कराती है। होली जैसे उत्सवों में यदि हम रासायनिक रंगों के स्थान पर प्राकृतिक या गोमय गुलाल का प्रयोग करें, तो यह केवल एक पर्यावरणीय पहल नहीं, बल्कि आत्मनिर्भर भारत के संकल्प को सशक्त करने का माध्यम भी है।

आज आवश्यकता है कि हम अपने अतीत के गौरव से प्रेरणा लें, वर्तमान की चुनौतियों को स्वीकारें और भविष्य के लिए दृढ़ संकल्प करें। यह नया भारत संतों की करुणा, युवाओं के उत्साह, वैज्ञानिकों की प्रतिभा और किसानों के परिश्रम से निर्मित हो रहा है। "नायमात्मा बलहीनेन लभ्यः" हमें बताता है कि सशक्त, संकल्पित और जागरूक समाज ही सशक्त राष्ट्र का निर्माण कर सकता है। आइए, इस पावन होली पर हम सब यह संकल्प लें कि स्वदेशी, स्वाभिमान और स्वावलंबन की भावना को अपने जीवन में उतारेंगे। यही भारत की आत्मा का सम्मान होगा और यही विकसित भारत की ओर हमारा सच्चा योगदान।

आप सभी सुधी पाठकों को होली की हार्दिक शुभकामनाएँ।

श्रेष्ठ मनुष्य बनने की दैनंदिन अभ्यास पद्धति का नाम है राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

20 एवं 21 फरवरी को मेरठ के माधव कुंज में मेरठ प्रान्त एवं ब्रज प्रान्त के संपर्क विभाग द्वारा दो दिवसीय गोष्ठियां आयोजित की गयीं। पहले दिन खिलाड़ी संवाद गोष्ठी में खिलाडियों के साथ, तथा दूसरे दिन प्रमुख जन गोष्ठी में परम पूज्य सरसंघचालक जी ने उपस्थित जन समुदाय के साथ संवाद किया। मुख्य रूप से संघ के विचार को उनके सामने रखा एवं उनके प्रश्नों के उत्तर भी दिए। प्रस्तुत हैं संवाद की कुछ झलकियाँ -

इस देश के क्रियाकलापों में अब संघ केंद्र स्थान पर आ गया है। 100 साल से चलते चलते आज संघ कार्य बड़ा हो गया। इसलिए भी लोगों की जिज्ञासा है, कुतूहल है और संघ के स्वयंसेवकों ने भी अनेक क्षेत्रों में काम करते करते वहां विविध संगठनों को खड़ा किया है, यह सब देखते हुए समाज की भी संघ से अपेक्षाएं बढ़ी हैं। समाज संघ से अपेक्षा करता है उस दृष्टि से समाज में भी संघ को जानने की, संघ को समझने की जिज्ञासा रहती है। उस दृष्टि से संगठन की समाज को ठीक-ठीक जानकारी होनी चाहिए। परंतु इतना बड़ा होने के बारे में, सर्वत्र प्रसिद्ध होने के बाद भी संघ क्या है? और क्या करता है? इसकी स्पष्ट कल्पना अभी सर्वत्र नहीं है। इसके कारण भी हैं। एक कारण है कि संघ जैसा दूसरा कोई संगठन है नहीं। इसलिए संघ को संघ में जाकर ही समझना होगा।

संघ के स्वयंसेवक गणवेश पहनकर रोड मार्च करते हैं, लेकिन संघ पैरामिलिट्री संगठन नहीं है। संघ की शाखा के एक घंटे का एक बड़ा हिस्सा खेलों को जाता है लेकिन संघ कोई क्रीड़ा संस्था नहीं है। संघ शाखा में गीत भी होते हैं, घोष वादन भी होता है लेकिन संघ कोई संगीत चलाने वाली संस्था नहीं है। संघ के लोग राजनीति में जाकर सेवाएं दे रहे हैं लेकिन संघ कोई राजनीतिक दल नहीं है। यदि ऐसी बातों को देखकर संघ को समझने का प्रयास किया गया तो संघ के विषय में समझ कम और गलतफहमी ज्यादा होगी।

1857 के बाद देश में चार प्रकार के विचार प्रवाह चले :-

• पहला विचार प्रवाह था कि एक बार हारे तो क्या हुआ? अंग्रेज यहां पर शस्त्रों के भरोसे राज्य करते हैं तो हमको भी शस्त्र उठाकर उसको परास्त करना चाहिए और इसलिए सशस्त्र क्रांति की धारा चली।

• दूसरा विचार प्रवाह था कि देश को आजाद कराने के लिए हमें समाज में राजनीतिक जागृति चाहिए। इसलिए इंडियन नेशनल कांग्रेस को तत्कालीन महापुरुषों ने इसका साधन बनाया और आजादी की लड़ाई में जुट गये।

• तीसरा प्रवाह समाज सुधार का था। यह मानता था कि देश का जन सामान्य अंधश्रद्धाओं से ग्रसित हैं। रूढ़ी-कुरीतियां समाज में कठिनाइयां पैदा करती हैं। हम आपस में बंट गए हैं इसलिए पहले समाज का सुधार करना होगा।

• चौथा विचार प्रवाह था कि हमारा समाज अपनी मूल संस्कृति से, अपने मूल्यों से भटक गया है इस कारण से समाज की यह दुर्दशा हुई है और इसलिए हमें अपने मूल को पहचानने की आवश्यकता है। स्वामी दयानंद सरस्वती, स्वामी विवेकानंद के विचारों ने यह जागृति दी।

भारत के समाज को एकता में बांधना सरल नहीं है। विविध भाषाएं, विविध पंथ-सम्प्रदाय, विविध देवी-देवता, खान-पान, रीति-रिवाज और भौगोलिक विविधता हमारी पहचान है इस विविधता भरे समाज का एकत्व किस पर आधारित हो। हमारे ऋषि-मुनियों गुरुओं ने साक्षात्कार किया कि सृष्टि का आधार एक ही ईश्वर है और वही एकत्व का आधार है। विविधता में एकता या एकत्व की विविधता ही सत्य है। विविधता में एकता का ध्यान रख के चलो। सत्य, करुणा, सुचिता, तपस्व चार स्तंभों पर खड़ा धर्म ही मूल है और इसी मूल से हमारी सनातन भारतीय हिंदू संस्कृति का आविर्भाव हुआ है जो विश्व संस्कृति है। वही संस्कृति हमें आदि काल से एक सूत्र में पिरोये हुए है।

संघ एक ही काम करता है और वह है संपूर्ण हिंदू समाज के संगठन के लिए व्यक्ति निर्माण का कार्य। क्योंकि श्रेष्ठ व्यक्ति ही श्रेष्ठ वातावरण उत्पन्न करेंगे, उससे समाज संगठित हो जाएगा। संघ कुछ नहीं करेगा किन्तु स्वयंसेवक कुछ नहीं छोड़ेंगे। संघ अपने स्थापना के काल ससे ही इसी एक उद्देश्य के प्रति समर्पित है।

-संघ से जुड़ने के पाँच मार्ग हैं-

- ☞ सीधे शाखा में आकर संघ को देखना, दायित्व लेना और संघकार्य करना।
- ☞ संघ प्रेरित किसी संगठन में कार्य करना।
- ☞ संघ से संपर्क रखते हुए संघ कार्य में अपना सहयोग करना।
- ☞ संघ के द्वारा आयोजित कार्यक्रमों में आना-जाना बनाए रखना।
- ☞ अपने क्षेत्र में निस्वार्थ, प्रामाणिक और उत्कृष्ट कार्य करना।

यह पांचवा कार्य ऐसा है कि यदि आप संघ का नाम नहीं जानते हुए भी राष्ट्रहित, समाज हित की किसी भी गतिविधि में सक्रिय हैं तो संघ की दृष्टि में आप स्वयंसेवक ही हैं।

जीवन में उच्च मूल्यों की शिक्षा घरों में, विद्यालयों में और समाज के वातावरण से नई पीढ़ी को मिलनी चाहिए। ऐसी व्यवहारिक शिक्षा से सारी बातें ठीक होती है। जिनको यह शिक्षा देनी है उनको स्वयं इसका उदाहरण बनना पड़ता है। पर उपदेश कुशल बहुतेरे से परिवर्तन नहीं होगा। महात्मा गांधी जी ने कहा है 'बी द चेंज दैट यू वांट टू ब्रिंग अबाउट' अर्थात जो परिवर्तन आप लाना चाहते हो खुद वह परिवर्तन बनिए। ऐसा करने से ही समाज में परिवर्तन आता है।

भारत की परिवार व्यवस्था अनुपम है। इसका अध्ययन बाकी सारे लोग कर रहे हैं। बाहर परिवार एक कॉन्ट्रैक्ट है, सोशल कॉन्ट्रैक्ट, हमारे यहां परिवार यानी संबंध है, अपनापन है। इसलिए हमारा परिवार टूटता नहीं। उधर थोड़ा प्रेशर आने से परिवार टूट जाता। अपनत्व भाव से ही हमारा परिवार कायम रहेगा। जीवन में अकेलेपन से ही युवा व्यसन की ओर जाते हैं। कुटुंब प्रबोधन इसका व्यवहारिक हल है। परिवार से जुड़ा व्यक्ति कभी अकेलेपन से नहीं जूझता है, अपनत्व की भावना हमारे बहुआयामी विकास में सहायक होती है।

हमारी चिर पुरातन संस्कृति को देने वाली हमारी भारत माता है। सनातन समय से हम इसी में रहे हैं। इसी के भविष्य के साथ हमारे जीवन का भविष्य निर्धारित होता है। सावरकर जी ने कहा है कि तुम्हारे लिए जीवन, तुम्हारे बिना जीवन ये मरण है और तुम्हारे लिए मरण ये जीवन है। ऐसा भाव लेकर ये समाज सदियों से यहां जीते आये हैं। हर पीढ़ी में तब से अभी तक इस देश, समाज, धर्म-संस्कृति के लिए अपने प्राण न्योछावर करने वाले, अपने परिश्रम से इसका संवर्धन करने वाले महापुरुष हम सबके लिए आदर्श हैं। अपनी यह संस्कृति समावेशी है। एकमात्र संस्कृति जो इंक्लूसिव है। भारत के भूगोल से लेकर, भारत के स्वभाव तक यह पूरी जो हमारी पहचान है, उस पहचान को दुनिया हिंदू कहती है। हिंदू कोई नाम नहीं है। हिंदू विशेषण है। वो स्वभाव बताता है। इस स्वभाव के तहत हम जुटे रहे। इस स्वभाव को भूले, हम टूटे और लुटे। यह हमारा इतिहास है। हिंदू भाव को जब-जब भूले आई विपद महान, भाई छूटे धरती खोई मिटे धर्म संस्थान। ये अपना इतिहास है। ये अपना वर्तमान है। इसलिए इस समाज को जोड़ना है तो हिंदुत्व का भाव स्वतः समाज में जागृत करते हुए और जो आचरण में गिरावट आई है उसके लिए बिगड़ी हुई आदतें सुधारने के लिए अच्छी आदतों का प्रतिदिन अभ्यास करना होगा। अच्छा मनुष्य बनना है तो आदत करनी पड़ती है। उस आदत करने की पद्धति का नाम है राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ।

मेरठ की रफ्तार : विकसित भारत का आधार

एशिया की तेज़ रफ्तार 'नमो भारत' रैपिड रेल से बदली पश्चिमी उत्तर प्रदेश की तस्वीर

भारत का सांस्कृतिक हृदय कहे जाने वाले उत्तर प्रदेश की स्पोर्ट्स सिटी के मेरठ ने आधुनिक भारत के विकास इतिहास में एक नया स्वर्णिम अध्याय जोड़ दिया है। देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी तथा उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के कर–कमलों द्वारा 22 फरवरी 2026 को दिल्ली–मेरठ 'नमो भारत' कॉरिडोर एवं 'मेरठ मेट्रो' का शुभारंभ केवल एक परियोजना का उद्घाटन नहीं, बल्कि "विकसित भारत" के संकल्प को नई गति देने वाला ऐतिहासिक क्षण है। यह पहल पश्चिमी उत्तर प्रदेश के लिए तीव्र, सुरक्षित और विश्वस्तरीय कनेक्टिविटी का नया युग लेकर आई है।

82 किलोमीटर का आधुनिक कॉरिडोर : गति, सुविधा और तकनीक का संगम - लगभग 82 किलोमीटर लंबा दिल्ली–मेरठ नमो भारत कॉरिडोर देश की पहली क्षेत्रीय रैपिड ट्रांजिट प्रणाली (RRTS) सेवा है, जिसे 'नमो भारत' नाम दिया गया है। इस परियोजना की अनुमानित लागत लगभग 12,930 करोड़ बताई गई है। यह कॉरिडोर राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र को पश्चिमी उत्तर प्रदेश से अत्याधुनिक परिवहन सुविधा के माध्यम से जोड़ता है। एशिया की सबसे तेज रफ्तार वाली इस रैपिड रेल की अधिकतम गति लगभग 160 किमी प्रति घंटा है, जबकि परिचालन गति 120–130 किमी प्रति घंटा के आसपास है। इसके माध्यम से मेरठ से दिल्ली तक की दूरी, जो कभी 4–5 घंटे में तय होती थी, अब लगभग 45–50 मिनट में पूरी की जा रही है। यह परिवर्तन न केवल समय की बचत करता है, बल्कि जीवन की गुणवत्ता में भी व्यापक सुधार लाता है। इस परियोजना की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि 'नमो भारत' और 'मेरठ मेट्रो' दोनों का संचालन एक ही बुनियादी ढांचे पर किया जा रहा है। यह देश में अपनी तरह की पहली अभिनव पहल है, जहाँ क्षेत्रीय रैपिड रेल और शहरी मेट्रो सेवा एकीकृत रूप में कार्य कर रही हैं।

एक ही स्टेशन और ट्रैक पर दोनों सेवाओं का संचालन तकनीकी उत्कृष्टता और कुशल प्रबंधन का उदाहरण है। इससे यात्रियों को निर्बाध और सहज यात्रा अनुभव मिलता है। यह मॉडल भविष्य में अन्य महानगरों और क्षेत्रीय शहरों के लिए मार्गदर्शक सिद्ध हो सकता है।

'नमो भारत' रैपिड रेल और मेरठ मेट्रो में विश्वस्तरीय सुविधाएं उपलब्ध कराई गई हैं। वातानुकूलित डिब्बे, स्वचालित दरवाजे, आरामदायक सीटें, सीसीटीवी निगरानी, महिला सुरक्षा के विशेष प्रावधान, दिव्यांगजन–अनुकूल व्यवस्था, डिजिटल सूचना प्रणाली और स्मार्ट टिकटिंग प्रणाली जैसी सुविधाएं इसे अत्याधुनिक परिवहन प्रणाली बनाती हैं। स्टेशनों को भी आधुनिक वास्तुकला और यात्री सुविधाओं से सुसज्जित किया गया है। एस्केलेटर, लिफ्ट, पार्किंग, स्वच्छता और सुरक्षा के उच्च मानक इस परियोजना की गुणवत्ता को दर्शाते हैं। यह संपूर्ण व्यवस्था "सुरक्षित, तीव्र और टिकाऊ" परिवहन के सिद्धांत पर आधारित है।

कनेक्टिविटी से निवेश और रोजगार को नई ऊर्जा : तेज रफ्तार कनेक्टिविटी किसी भी क्षेत्र के आर्थिक विकास की रीढ़ होती है। दिल्ली–मेरठ नमो भारत कॉरिडोर से पश्चिमी उत्तर प्रदेश के शहरों को राष्ट्रीय राजधानी से सीधा और त्वरित संपर्क प्राप्त हुआ है। इससे उद्योग, व्यापार और सेवा क्षेत्र को नई ऊर्जा मिलेगी।

मेरठ, गाजियाबाद और आसपास के क्षेत्रों में औद्योगिक निवेश की संभावनाएं बढ़ेंगी। छोटे और मध्यम उद्यमों को बड़े बाजारों तक तेज़ी से पहुंचने का अवसर मिलेगा। किसानों को अपनी उपज

समय पर राष्ट्रीय बाजारों तक पहुंचाने में सुविधा होगी। युवाओं को शिक्षा और रोजगार के बेहतर अवसर उपलब्ध होंगे, क्योंकि वे कम समय में दिल्ली और अन्य प्रमुख केंद्रों तक पहुंच सकेंगे। रैपिड रेल परियोजना पर्यावरण संरक्षण के दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण है। सड़क यातायात पर निर्भरता कम होने से ईंधन की खपत और प्रदूषण में कमी आएगी। बड़ी संख्या में निजी वाहनों के स्थान पर सार्वजनिक परिवहन को बढ़ावा देने से कार्बन उत्सर्जन घटेगा और यातायात जाम की समस्या में राहत मिलेगी। यह पहल सतत विकास (Sustainable Development) के सिद्धांतों के अनुरूप है, जो आधुनिक भारत की प्राथमिकताओं में शामिल है।

मेरठ ऐतिहासिक और सांस्कृतिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण शहर रहा है। अब यह आधुनिक परिवहन क्रांति का भी केंद्र बन गया है। बेहतर कनेक्टिविटी से पर्यटन को बढ़ावा मिलेगा। ऐतिहासिक स्थलों, खेल उद्योग और शैक्षणिक संस्थानों को अधिक पहचान मिलेगी। यह परियोजना केवल यात्रा को आसान नहीं बनाती, बल्कि क्षेत्रीय असमानताओं को कम करने की दिशा में भी महत्वपूर्ण कदम है। छोटे शहरों को महानगरों के समान अवसर उपलब्ध कराने की यह पहल "समावेशी विकास" की दिशा में मील का पत्थर है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में बुनियादी ढांचे के क्षेत्र में अभूतपूर्व निवेश और कार्यान्वयन देखा गया है। सड़क, रेल, हवाई अड्डे और डिजिटल कनेक्टिविटी के क्षेत्र में तीव्र गति से कार्य हो रहे हैं। दिल्ली–मेरठ नमो भारत कॉरिडोर उसी दृष्टि का परिणाम है, जिसमें "नया भारत" तीव्र गति, उच्च गुणवत्ता और दीर्घकालिक दृष्टिकोण के साथ आगे बढ़ रहा है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में उत्तर प्रदेश में कानून–व्यवस्था, निवेश और आधारभूत संरचना के क्षेत्र में व्यापक परिवर्तन हुए हैं। यह परियोजना राज्य सरकार और केंद्र सरकार के समन्वित प्रयासों का उत्कृष्ट उदाहरण है। पश्चिमी उत्तर प्रदेश लंबे समय से बेहतर कनेक्टिविटी की अपेक्षा करता रहा है। अब यह क्षेत्र राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र से तीव्र और निर्बाध रूप से जुड़ चुका है। इससे क्षेत्र की आर्थिक गतिविधियों में तेजी आएगी और मेरठ आधुनिक शहरी विकास के नए मानक स्थापित करेगा।

"मेरठ की रफ्तार – विकसित भारत का आधार" केवल एक नारा नहीं, बल्कि बदलती हुई वास्तविकता है। एशिया की तेज रफ्तार 'नमो भारत' रैपिड रेल ने यह सिद्ध कर दिया है कि जब संकल्प मजबूत हो और नेतृत्व दूरदर्शी हो, तो विकास की गति को कोई नहीं रोक सकता।

यह ऐतिहासिक परियोजना न केवल मेरठ बल्कि पूरे राष्ट्र के लिए गर्व का विषय है। आधुनिक परिवहन क्रांति की यह सौगात आने वाले वर्षों में लाखों लोगों के जीवन को सरल, सुरक्षित और समृद्ध बनाएगी। विकसित भारत की ओर बढ़ते कदमों में मेरठ अब अग्रिम पंक्ति में खड़ा है–नई ऊर्जा, नई आशा और नई रफ्तार के साथ। ■

उत्तर प्रदेश की सुर्खियां

योगी की सिंगापुर यात्रा से प्रदेश के विकास की बढ़ेगी गति

23 फरवरी को अपनी सिंगापूर यात्रा के प्रथम दिन सी एम योगी आदित्यनाथ ने महत्वपूर्ण समझौते का शुभारम्भ किया। यूनिवर्सल सक्सेस ग्रुप ने उत्तर प्रदेश में कुल 6,650 करोड़ रुपये के निवेश के लिए तीन महत्वपूर्ण समझौता ज्ञापनों (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए हैं। ग्रुप हाउसिंग, लॉजिस्टिक्स और हाइपरस्केल डेटा सेंटर जैसे रणनीतिक क्षेत्रों में निवेश होंगे। इन तीनों परियोजनाओं से 20 हजार से अधिक रोजगार भी सृजित होंगे।

ग्लोबल बिजनेस समिट 2026 में उत्तर प्रदेश

नई दिल्ली में आयोजित 'ग्लोबल बिजनेस समिट 2026' में उत्तर प्रदेश एक प्रमुख आकर्षण बनकर उभरा। राज्य की नोडल एजेंसी 'इन्वेस्ट यूपी' ने इस प्रतिष्ठित मंच पर देश–विदेश के निवेशकों के समक्ष प्रदेश के प्रगतिशील औद्योगिक इकोसिस्टम, नीतिगत सुधारों और सुदृढ़ बुनियादी ढांचे को सशक्त ढंग से प्रस्तुत किया। प्रदेश के अवस्थापना एवं औद्योगिक विकास आयुक्त श्री दीपक कुमार ने कहा कि बेहतर कनेक्टिविटी, विशाल उपभोक्ता आधार और सुदृढ़ कानून–व्यवस्था के तीन स्तंभों के दम पर उत्तर प्रदेश, माननीय मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के 'ट्रिलियन–डॉलर अर्थव्यवस्था' के संकल्प को साकार करने की दिशा में तेजी से बढ़ रहा है। उन्होंने रेखांकित किया कि उत्तर प्रदेश की 16 प्रतिशत की विकास दर वर्तमान में राष्ट्रीय औसत से काफी आगे है।

मौनी अमावश्या पर गूंजा गंगा की सफाई ही गंगा की पूजा है

18 जनवरी 2026 को वाराणसी में गंगा तटों पर विशेष सफाई और अपशिष्ट प्रबंधन अभियान शुरू हुआ। मौनी अमावश्या के अवसर पर गंगा तट पर गंगा स्वच्छता की गूंज सुनाई पड़ी । हाथों में स्वच्छता स्लोगन लिखी तख्तियां लेकर नमामि गंगे के स्वयंसेवकों ने गंगा किनारे स्वच्छता बनाए रखने के लिए सभी को जागरूक किया। गंगा की सफाई ही गंगा की पूजा है, गंगा अविरल निर्मल होगी, यही हमारा नारा है, हम नहीं रुकेंगे – हम स्वच्छ करेंगे के जागरूकता भरे शब्द सुनकर लोगों ने गंगा किनारे गंदगी न करने का संकल्प किया।

आगरा में ताज महोत्सव

ताजनगरी आगरा के ताज महोत्सव का 18 से 27 फरवरी तक हुआ आयोजन। यह सांस्कृतिक उत्सव प्रतिवर्ष देशभर की कला, संस्कृति, व्यंजन और हस्तशिल्प को एक मंच पर लाने के लिए जाना जाता है। इस बार ताज महोत्सव का 34वां संस्करण आयोजित हुआ, इस बार महोत्सव में "वन डिस्ट्रिक्ट वन प्रोडक्ट" (ODOP) योजना की विशेष झलक भी दिखाई दी।

झाँसी में 'स्वच्छ जल', 'स्वच्छ मन' अभियान

22 फरवरी को झांसी में 'प्रोजेक्ट अमृत' कार्यक्रम के तहत 'स्वच्छ जल', 'स्वच्छ मन' परियोजना को साकार रूप देने के लिए संत निरंकारी मिशन के सेवादारों व श्रद्धालुओं द्वारा जन जागरण कार्यक्रम हुआ। संत निरंकारी मिशन द्वारा 'प्रोजेक्ट अमृत' के अंतर्गत 'स्वच्छ जल, स्वच्छ मन' अभियान का यह चौथा चरण है। मिशन के अधिकारीयों के अनुसार देश भर में एक साथ 1500 स्थानों पर यह कार्यक्रम आयोजित हुए।

श्री अयोध्या धाम में सांस्कृतिक उत्सव में उमड़ी श्रद्धालुओं की भीड़

फरवरी माह में अयोध्या धाम में आयोजित भव्य सांस्कृतिक उत्सव में हजारों श्रद्धालु शामिल हुए। लोक कलाकारों की प्रस्तुतियों और दीप सज्जा ने वातावरण को आध्यात्मिक रंग दिया। 21 फरवरी को श्री रामलला का नील-वर्णी राजसी वेशभूषा में दिव्य श्रृंगार हुआ, 22 फरवरी को 'रन फॉर राम' मैराथन, 27 फरवरी को रंगभरी एकादशी आयोजन हुआ।

प्रयाग में माघ मेला

मकर संक्रांति से महाशिवरात्रि तक तीर्थराज प्रयाग में माघ मेला लगा। इस दौरान उत्तर प्रदेश में उत्साह और सुव्यवस्था का अनूठा संगम देखने को मिला। मेले में देश-विदेश से आए लाखों श्रद्धालुओं ने आस्था की डुबकी लगाई। राज्य सरकार द्वारा स्वच्छता, सुरक्षा और यातायात प्रबंधन के विशेष इंतज़ाम किए गए, जिससे श्रद्धालुओं को किसी प्रकार की

असुविधा नहीं हुई। डिजिटल हेल्पडेस्क, स्वास्थ्य शिविर और खोया-पाया केंद्रों की बेहतर व्यवस्था ने मेले को और व्यवस्थित बनाया। स्थानीय व्यापारियों और हस्तशिल्पियों की बिक्री बढ़ी, जिससे क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था को भी मजबूती मिली। माघ मेले ने आध्यात्मिकता के साथ विकास और सुशासन का सकारात्मक संदेश दिया।

शिक्षामित्रों को मिलेगा प्रति माह 18 हजार रुपए वेतन

श्रेणी	पुराना मानदेय	नया मानदेय	वृद्धि
शिक्षामित्र	₹10,000	₹18,000	₹8,000
अनुदेशक	₹9,000	₹17,000	₹8,000
लागू होने की तारीख	अप्रैल से		
लाभार्थी संख्या	लगभग 1.75 लाख		

यूपी विधानसभा में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने शिक्षामित्रों के लिए महत्वपूर्ण घोषणा की है। उन्होंने कहा कि अप्रैल से शिक्षामित्रों को प्रति माह 18 हजार रुपए वेतन दिया जाएगा। इसके साथ ही शिक्षामित्रों के लिए पांच लाख रुपए तक का कैशलेस इलाज भी उपलब्ध होगा। यह फैसला शिक्षकों की आर्थिक और स्वास्थ्य सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए लिया गया है।

उत्तर प्रदेश का बजट हुआ जारी

उत्तर प्रदेश में योगी आदित्यनाथ सरकार ने 11 फरवरी को विधानसभा में अपना दसवां बजट पेश किया। वित्त वर्ष 2026-27 का यह बजट सरकार 2.0 के दूसरे कार्यकाल का अंतिम पूर्ण बजट है, क्योंकि अगले वर्ष उत्तर प्रदेश में विधान सभा चुनाव प्रस्तावित है। उत्तर प्रदेश सरकार के वित्त मंत्री सुरेख कुमार खन्ना ने नौ लाख, 12 हजार, 696 करोड़ 35 लाख रुपये का उत्तर प्रदेश बजट 2026-27 पेश किया कुल बजट ₹9.12 लाख करोड़ में 12.9 प्रतिशत की वृद्धि की गई है। इसमें पूंजीगत व्यय 19.5 प्रतिशत है। जन-आकांक्षाओं, सुशासन और समावेशी विकास के एजेंडे को केंद्र में रखकर 9.12 लाख करोड़ रुपये से अधिक के बजट से सरकार युवाओं, महिलाओं, किसानों और रोजगार सृजन पर फोकस किया है।

दिल्ली-एनसीआर की शीर्ष समाचार सुर्खियां (1 फरवरी – 20 फरवरी 2026)

20 फरवरी : DSSSB ने 911 पदों पर भर्ती का नोटिफिकेशन जारी किया, युवाओं के लिए रोजगार के अवसर बढ़े।

♦ ASO लीगल असिस्टेंट सहित कई पदों के लिए आवेदन प्रक्रिया शुरू हुई।

19 फरवरी : DMRC स्पोर्ट्स मीट 2026 का आयोजन, कर्मचारियों में उत्साह दिल्ली मेट्रो कर्मचारियों के बीच खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

18 फरवरी : दक्षिणी दिल्ली के दो तालाबों का पुनर्विकास होगा, जल संरक्षण को मिलेगा बढ़ावा।

♦ सरकार ने पर्यावरण संरक्षण और जल प्रबंधन के लिए नई योजना शुरू की।

17 फरवरी 2026 : पूर्वी दिल्ली में फुटओवर ब्रिज निर्माण से पैदल यात्रियों को राहत नए फुटओवर ब्रिज निर्माण से सड़क पार करना सुरक्षित होगा और दुर्घटनाओं में कमी आने की संभावना बढ़ी है।

16 फरवरी 2026 : दिल्ली पुलिस का विशेष अभियान, अपराधियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई शुरू :

♦ राजधानी में कानून व्यवस्था मजबूत करने के लिए पुलिस ने अभियान चलाकर संदिग्ध अपराधियों को गिरफ्तार किया।

15 फरवरी 2026 : वैलेंटाइन डे के बाद दिल्ली बाजारों में व्यापार गतिविधियां तेज हुईं।

♦ त्योहारी खरीदारी के कारण व्यापारियों को अच्छा लाभ मिला और बाजारों में ग्राहकों की संख्या बढ़ी।

14 फरवरी 2026: वैलेंटाइन डे पर राजधानी में सुरक्षा व्यवस्था रही पूरी तरह सख्त पुलिस ने सार्वजनिक स्थानों और संवेदनशील क्षेत्रों में गश्त बढ़ाकर सुरक्षा व्यवस्था सुनिश्चित की।

13 फरवरी 2026 : प्रदूषण नियंत्रण के लिए औद्योगिक इकाइयों पर निगरानी सख्त की गई।

♦ सरकार ने वायु गुणवत्ता सुधारने हेतु प्रदूषण फैलाने वाले उद्योगों के खिलाफ कार्रवाई शुरू की।

12 फरवरी 2026 : नोएडा में नई आईटी परियोजना से रोजगार और निवेश बढ़ेगा नई तकनीकी परियोजना से युवाओं के लिए रोजगार के अवसर और क्षेत्र में आर्थिक विकास बढ़ेगा।

11 फरवरी 2026 : स्मार्ट ट्रैफिक सिस्टम से दिल्ली में यातायात प्रबंधन बेहतर हुआ।

♦ नई तकनीक से ट्रैफिक सिग्नल और निगरानी प्रणाली मजबूत हुई, जिससे जाम समस्या कम होगी।

10 फरवरी 2026 : नगर निगम का सफाई अभियान, सार्वजनिक स्थानों पर स्वच्छता बेहतर हुई।

♦ सफाई अभियान के तहत सड़कों और बाजारों में स्वच्छता सुधारने के लिए विशेष अभियान चलाया गया।

9 फरवरी 2026 : दिल्ली विश्वविद्यालय ने नए रोजगारोन्मुखी शैक्षणिक पाठ्यक्रम शुरू किए।

♦ छात्रों को आधुनिक कौशल और रोजगार अवसर प्रदान करने के लिए नए पाठ्यक्रम लागू किए गए।

8 फरवरी 2026 : गाजियाबाद में नई सड़क परियोजना से ट्रैफिक समस्या कम होगी।

♦ नई सड़क निर्माण से यातायात व्यवस्था बेहतर होगी और यात्रियों को सुविधा मिलेगी।

7 फरवरी 2026 : गुरुग्राम में साइबर अपराधियों के खिलाफ पुलिस की बड़ी कार्रवाई।

♦ पुलिस ने साइबर ठगी करने वाले गिरोह का खुलासा कर कई आरोपियों को गिरफ्तार किया।

6 फरवरी 2026 : दिल्ली–एनसीआर में तापमान बढ़ने से ठंड से राहत मिली ।

5 फरवरी 2026 : नोएडा मेट्रो विस्तार से क्षेत्रीय कनेक्टिविटी और परिवहन मजबूत होगा। नई मेट्रो लाइन से यात्रियों को सुविधा और ट्रैफिक दबाव कम होने की उम्मीद है।

4 फरवरी 2026 : महिला सुरक्षा के लिए पुलिस ने विशेष गश्त और अभियान चलाया। संवेदनशील क्षेत्रों में पुलिस तैनाती बढ़ाकर महिलाओं की सुरक्षा सुनिश्चित करने का प्रयास किया गया।

3 फरवरी 2026 : बस सेवाओं के विस्तार से दिल्ली में सार्वजनिक परिवहन मजबूत हुआ नई बस सेवाओं से यात्रियों को बेहतर सुविधा और परिवहन विकल्प उपलब्ध हुए।

2 फरवरी 2026 : नए फ्लाईओवर निर्माण से राजधानी में ट्रैफिक जाम कम होगा। फ्लाईओवर परियोजना से यातायात सुगम होगा और यात्रा समय कम होने की संभावना है।

1 फरवरी 2026 : बजट घोषणाओं से दिल्ली–एनसीआर में विकास परियोजनाओं को गति मिली
नई सरकारी योजनाओं से बुनियादी ढांचा मजबूत होगा और रोजगार के अवसर बढ़ेंगे।

■

हिंदुत्व और राष्ट्रीय पहचान विचारधारा से व्यवहार तक

भारत की राष्ट्रीय पहचान सदैव उसकी सांस्कृतिक विविधता, ऐतिहासिक परंपराओं और सामाजिक सहअस्तित्व पर आधारित रही है। परंतु 21वीं सदी के दूसरे दशक के बाद "हिंदुत्व" एक ऐसी विचारधारा के रूप में उभरा है, जिसने राष्ट्रीय पहचान के विमर्श को गहराई से प्रभावित किया है। हिंदुत्व अब केवल एक वैचारिक अवधारणा नहीं, बल्कि राजनीतिक निर्णयों, सांस्कृतिक नीतियों और सामाजिक व्यवहार में स्पष्ट रूप से दिखाई देने वाला व्यावहारिक तत्व बन चुका है। विभिन्न राज्यों में हुई घटनाएं और सरकारी निर्णय इस परिवर्तन को प्रमाणित करते हैं।

डॉ. रामशंकर 'विद्यार्थी'
सहायक प्राध्यापक
पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग आईआईएमटी
कॉलेज ऑफ मैनेजमेंट, ग्रेटर नोएडा

उत्तर प्रदेश

सबसे महत्वपूर्ण उदाहरण उत्तर प्रदेश के अयोध्या में राम मंदिर निर्माण का है। 9 नवंबर 2019 को भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने अयोध्या विवाद पर ऐतिहासिक निर्णय सुनाते हुए विवादित भूमि पर राम मंदिर निर्माण का मार्ग प्रशस्त किया। इसके बाद 5 अगस्त 2020 को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने राम मंदिर का भूमि पूजन किया। अंततः 22 जनवरी 2024 को अयोध्या में राम मंदिर में रामलला की प्राण प्रतिष्ठा की गई, जिसमें देश–विदेश से हजारों श्रद्धालु और अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित हुए। इस घटना को केवल धार्मिक आयोजन नहीं बल्कि राष्ट्रीय सांस्कृतिक पुनर्जागरण के प्रतीक के रूप में देखा गया। उत्तर प्रदेश सरकार के अनुसार, 22 जनवरी 2024 के बाद पहले छह महीनों में अयोध्या में 10 करोड़ से अधिक श्रद्धालुओं ने दर्शन किए, जिससे यह स्पष्ट हुआ कि हिन्दुत्व सांस्कृतिक और राष्ट्रीय पहचान के व्यवहारिक स्वरूप में परिवर्तित हो चुका है।

गुजरात

गुजरात में हिंदुत्व आधारित सांस्कृतिक पहचान को सुदृढ़ करने के प्रयास लंबे समय से देखे जा रहे हैं। 31 अक्टूबर 2018 को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने गुजरात के केवड़िया में 'स्टैच्यू ऑफ यूनिटी' का उद्घाटन किया, जो सरदार वल्लभभाई पटेल की 182 मीटर ऊंची प्रतिमा है। इसे भारत की राष्ट्रीय एकता और सांस्कृतिक गौरव के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत किया गया। गुजरात पर्यटन विभाग के अनुसार, उद्घाटन के पहले वर्ष में ही लगभग 26 लाख पर्यटक इस स्मारक को देखने पहुँचे। यह दर्शाता है कि सांस्कृतिक प्रतीकों के माध्यम से राष्ट्रीय पहचान को मजबूत करने का प्रयास किया गया।

मध्य प्रदेश

मध्य प्रदेश में भी हिंदुत्व और राष्ट्रीय पहचान का व्यवहारिक स्वरूप स्पष्ट रूप से देखा गया। उज्जैन स्थित महाकालेश्वर मंदिर के विस्तार के लिए 'महाकाल लोक कॉरिडोर' का निर्माण किया गया। इसका पहला चरण 11 अक्टूबर 2022 को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा उद्घाटित किया गया। इस परियोजना की लागत लगभग 856 करोड़ रुपये थी। इस परियोजना के बाद उज्जैन में धार्मिक पर्यटन में उल्लेखनीय वृद्धि हुई और 2023 में लगभग 5 करोड़ श्रद्धालुओं ने महाकाल मंदिर के दर्शन किए। यह घटना दर्शाती है कि धार्मिक स्थलों के विकास को सांस्कृतिक राष्ट्रवाद और राष्ट्रीय पहचान से जोड़ा जा रहा है।

उत्तराखण्ड

उत्तराखंड में भी धार्मिक स्थलों के पुनर्विकास के माध्यम से हिंदुत्व आधारित सांस्कृतिक पहचान को मजबूत किया गया। 5 नवंबर 2021 को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने केदारनाथ धाम पुनर्विकास परियोजना का उद्घाटन किया। 2013 की आपदा के बाद इस परियोजना के माध्यम से केदारनाथ मंदिर और आसपास के क्षेत्र का व्यापक पुनर्निर्माण किया गया। उत्तराखंड पर्यटन विभाग के अनुसार, वर्ष 2023 में चारधाम यात्रा में 55 लाख से अधिक श्रद्धालु शामिल हुए, जो एक रिकॉर्ड संख्या थी। यह दर्शाता है कि धार्मिक स्थलों का विकास राष्ट्रीय सांस्कृतिक चेतना को मजबूत करने का माध्यम बन चुका है।

महाराष्ट्र

महाराष्ट्र में हिंदुत्व की अवधारणा ऐतिहासिक विरासत और क्षेत्रीय गौरव से जुड़ी हुई है। 19 फरवरी 2023 को छत्रपति शिवाजी महाराज की जयंती पूरे राज्य में सरकारी स्तर पर बड़े पैमाने पर मनाई गई। महाराष्ट्र सरकार ने शिवाजी महाराज की विरासत को राष्ट्रीय गौरव और सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत किया। मुंबई और अन्य शहरों में आयोजित कार्यक्रमों में लाखों लोगों ने भाग लिया। यह दर्शाता है कि हिन्दुत्व केवल धार्मिक नहीं बल्कि ऐतिहासिक और सांस्कृतिक पहचान का हिस्सा बन गया है।

दक्षिण भारत

दक्षिण भारत, विशेष रूप से कर्नाटक में हिंदुत्व का प्रभाव शिक्षा और सांस्कृतिक नीतियों में देखा गया। 16 मार्च 2023 को कर्नाटक सरकार ने स्कूल पाठ्यक्रम में भारतीय परंपराओं और सांस्कृतिक विरासत से जुड़े विषयों को शामिल करने का निर्णय लिया। इस निर्णय का उद्देश्य छात्रों को भारतीय सांस्कृतिक पहचान से जोड़ना बताया गया। यह घटना दर्शाती है कि हिंदुत्व अब शिक्षा प्रणाली का भी हिस्सा बन चुका है।

इसके अतिरिक्त, 8 सितंबर 2022 को नई दिल्ली में 'सेंट्रल विस्टा परियोजना' के अंतर्गत प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कर्तव्य पथ का उद्घाटन किया और इंडिया गेट के पास नेताजी सुभाष चंद्र बोस की प्रतिमा स्थापित की। इस परियोजना को भारत की राष्ट्रीय पहचान और सांस्कृतिक विरासत को पुनर्स्थापित करने के प्रयास के रूप में प्रस्तुत किया गया।

राजनीतिक स्तर पर भी हिंदुत्व का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा गया है। 2014

और 2019 के लोकसभा चुनावों में भारतीय जनता पार्टी ने सांस्कृतिक राष्ट्रवाद और हिंदुत्व आधारित विचारधारा को प्रमुख मुद्दा बनाया। 2019 के लोकसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी ने 303 सीटें जीतकर पूर्ण बहुमत प्राप्त किया। यह दर्शाता है कि हिंदुत्व आधारित विचारधारा ने राष्ट्रीय स्तर पर राजनीतिक समर्थन प्राप्त किया।

मीडिया ने भी हिंदुत्व और राष्ट्रीय पहचान के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। 22 जनवरी 2024 को राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा का सीधा प्रसारण देश के लगभग सभी प्रमुख समाचार चौनलों द्वारा किया गया। इस कार्यक्रम को करोड़ों लोगों ने देखा। इससे यह स्पष्ट होता है कि हिंदुत्व अब राष्ट्रीय विमर्श का केंद्र बन चुका है।

हालांकि हिंदुत्व और राष्ट्रीय पहचान के संबंध को लेकर विभिन्न मत मौजूद हैं। कुछ विद्वानों का मानना है कि हिंदुत्व भारत की सांस्कृतिक पहचान और राष्ट्रीय एकता को मजबूत करता है। वहीं अन्य विशेषज्ञों का मानना है कि भारत की वास्तविक पहचान उसकी विविधता और बहुलता में निहित है, इसलिए राष्ट्रीय पहचान का निर्माण समावेशी होना चाहिए।

निष्कर्षतः, हिंदुत्व अब केवल एक वैचारिक अवधारणा नहीं, बल्कि व्यवहारिक वास्तविकता बन चुका है। अयोध्या में राम मंदिर निर्माण (22 जनवरी 2024), महाकाल कॉरिडोर उद्घाटन (11 अक्टूबर 2022), केदारनाथ पुनर्विकास (5 नवंबर 2021), स्टैच्यू ऑफ यूनिटी उद्घाटन (31 अक्टूबर 2018) और कर्तव्य पथ उद्घाटन (8 सितंबर 2022) जैसी घटनाएँ यह प्रमाणित करती हैं कि हिंदुत्व राष्ट्रीय पहचान के निर्माण में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

आज भारत एक ऐसे दौर से गुजर रहा है, जहाँ सांस्कृतिक विरासत और आधुनिक राष्ट्रीय पहचान के बीच संतुलन स्थापित करने का प्रयास किया जा रहा है। यह आवश्यक है कि यह प्रक्रिया भारत के संवैधानिक मूल्यों धर्मनिरपेक्षता, समानता और विविधताकृके अनुरूप हो। तभी भारत की राष्ट्रीय पहचान वास्तव में मजबूत, समावेशी और स्थायी बन सकेगी। ■

विश्व बंधुत्व और कल्याण के मार्ग का सूत्र है हिंदुत्व

डॉ. दीपा रानी
सहायक प्रोफेसर, दिल्ली विश्वविद्यालय

कहते हैं धर्म से अलग होकर एक स्वस्थ व संस्कारी समाज का निर्माण संभव नहीं है। एक ऐसी ही विचारधारा है हिंदुत्व जो संस्कृति, मानवता, परम्परा के मूल्यों पर केंद्रित है। यह आधुनिक भारत की एक वैचारिक अवधारणा है, जिसका संबंध भारतीय सभ्यता, संस्कृति और राष्ट्रीय पहचान से जोड़ा जाता है। वास्तव में ऐसा कहें तो गलत नहीं होगा कि हिंदुत्व जीवन जीने की एक कला है, अंतरराष्ट्रीय परिपेक्ष्य में विश्लेषण करेंगे तो पाएंगे हिंदुत्व केवल एक घरेलू राजनीतिक विचारधारा नहीं है बल्कि आज यह सांस्कृतिक, कूटनीतिक, प्रवासी भारतीयों की पहचान और वैश्विक विमर्श का विषय बन चुका है। आज भारतीय आध्यात्मिक ग्रंथों का विश्व स्तर पर अध्ययन हो रहा है। योग, आयुर्वेद, ध्यान और भारतीय दर्शन की वैश्विक लोकप्रियता बढ़ी है। इतिहासकारों का मानना है कि हिंदुत्व का उद्भव 20वीं शताब्दी के प्रारंभ में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के रूप में हुआ था लेकिन हिंदुत्व शब्द का सबसे पहला प्रयोग स्वातंत्र्य वीर विनायक दामोदर सावरकर द्वारा सन 1923 में उनकी पुस्तक Who is a Hindu में स्पष्ट रूप से किया गया। उन्होंने लिखा हिंदुत्व केवल धर्म नहीं, यह सांस्कृतिक चेतना, भौगोलिक राष्ट्रवाद और ऐतिहासिक चेतना का प्रतीक है। सावरकर के अनुसार हिंदुत्व पुण्यभूमि, पितृभूमि और सांस्कृतिक एकता का आधार है।

हिंदुत्ववादी विचारधारा शुरूवाती दौर से ही सृजनकारी, अहिंसक धर्मनिरपेक्ष, परिपालक और समावेशी रही है। यह हमें अनुशासित तरीके से सुमार्ग पर चलने की प्रेरणा देती है। आज यह सम्पूर्ण विश्व को ज्ञान, आध्यात्म, योग, विज्ञान और लोकतांत्रिक मूल्यों के संचलन में अभूतपूर्व योगदान दे रही है। आज सारा विश्व हिंदुत्व सभ्यता पर सिर्फ गर्व ही नहीं कर रहा अपितु उसे अपना भी रहा है। हिंदुत्व की सर्वजन हिताय और सर्वजन सुखाय की अवधारणा वर्तमान में विश्व में चर्चा का विषय है और साथ ही लोगों में इसे अपनाने की प्रवृत्ति भी देखने को मिल रही है। दुनिया के कई राष्ट्राध्यक्ष्यों ने अपने-अपने मंचों से हिन्दुत्व व हिंदू समुदाय की संस्कृति की सराहना की है और इसे विश्व के लिए कल्याणकारी भी बताया। आज विश्व के अधिकतर देशों में हिंदुत्व रीति रिवाजों को बड़े धूम धाम से मनाया जाता है और साथ ही उस देश के लोग बढ़ चढ़कर इसमें भागीदारी भी लेते हैं। जैसे –

इंडोनेशिया के विशेषकर बाली द्वीप में हिंदू धर्म के अनुसार आज भी प्रमुखता से पूजापाठ, विवाह, और मंदिर संस्कृति की झलक देखने को मिलती हैं।

इसी तरह कंबोडिया के अंगकोर वाट में आज भी ऐतिहासिक रूप से हिंदू सभ्यता का अद्भुत सांस्कृतिक प्रभाव देखने को मिलता है, थाईलैंड की राज परंपराओं में आज भी हिंदू देवी-देवताओं का सम्मान बड़े धूम धाम से मनाया जाता है। मलेशिया में तमिल हिंदू समुदाय थाइपुसम जैसे त्योहार राष्ट्रीय पहचान का हिस्सा हैं।

मॉरीशस में महाशिवरात्रि के दिन की लगभग आधी हिंदू आबादी को राष्ट्रीय अवकाश दिया जाता है।

फिजी में आज भी भारतीय मूल की बड़ी आबादी के साथ वहां के लोग बड़ी संख्या में रामायण मंडली परंपरा को निभाते हुए भगवान राम के आदर्शों को खुद में आत्मसात करने की प्रेरणा लेते हैं इसी तरह त्रिनिदाद और टोबैगो में

रामलीला और दिवाली राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित की जाती है।

कुछ और अन्य देशों में हिंदुत्व परंपरा संस्कृति और त्योहारों को मनाने का प्रचलन है और साथ ही उन देशों में सार्वजनिक अवकाश भी दिया जाना शामिल है।

सूरीनाम में तो कुछ हिंदू त्योहारों को सरकारी मान्यता भी प्राप्त है। संयुक्त राज्य अमेरिका के कई शहरों में दीपावली आधिकारिक रूप से मनाई जाती है।

इसी तरह लंदन और कनाडा जैसे देशों में सार्वजनिक दीपावली उत्सव मनाया जाता है। ऑस्ट्रेलिया के स्कूलों और सार्वजनिक कार्यक्रमों में कई हिंदू त्योहारों को शामिल कर उन्हें बड़े धूमधाम से मनाया जाता है।

कुछ ऐसे भी देश जैसे जापान, फ्रांस, जर्मनी, ब्राजील जहां हिंदू धर्म बहुसंख्यक नहीं है, लेकिन फिर भी वहां हमारे योग, आयुर्वेद, ध्यान, कर्म सिद्धांत जैसे विचार लोकप्रिय हैं।

हिंदुत्व सदैव से जनकल्याण सहित पृथ्वी पर मौजूद लगभग सभी जीवों– पेड़ पौधों को संरक्षित करना अपना धर्म मानता आ रहा है। अगर हम बात हिंदुत्व के प्रभाव की करें तो पाएंगे आज हिंदुत्व का प्रचारित– प्रसारित योगा पूरी दुनिया में सर्वमान्य है जिसे हर वर्ष 21 जून को सम्पूर्ण संसार में बढ़ चढ़ कर मनाया जाता है। विश्व स्तर पर योग और आध्यात्म में हिंदुत्व संस्कृति का योगदान –

2014 में संयुक्त राष्ट्र ने अंतरराष्ट्रीय योग दिवस (21 जून) के प्रस्ताव को स्वीकार किया। हमारे योग गुरु स्वामी बाबा रामदेव, श्री श्री रविशंकर, सद्गुरु, चिदानंद सरस्वती जैसे आध्यात्मिक गुरु वैश्विक स्तर पर योग और आध्यात्म के प्रचार–प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं जिसका लाभ विश्व के अनेकों लोग ले रहे हैं। आज विदेशों में भारतीय व्यंजन और परिधान के प्रति रुझान बढ़ा है। विश्व का सबसे बड़े सेवी संगठन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ हिंदुत्व की वकालत इसलिए करता है कि हिंदुत्व ही एक ऐसा धर्म है जो सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयः। सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चित् दुःखभाग् भवेत्।। की बात करता है। संपूर्ण विश्व में जिस तरह से आर्थिक, वैचारिक और सामाजिक उथल पुथल और अनिश्चितता से गुजर रहा है, आज जरूरत है हिंदुत्व जैसी विचारधारा और सोच को सभी धर्मो में विकसित करने की, जिससे सम्पूर्ण समाज और सारे विश्व के लोग एक दूसरे से जुड़े और परस्पर स्नेह करें ताकि एक स्वस्थ समाज का निर्माण हो सके। हिंदुत्व हमें अज्ञानता से ज्ञानता, अधर्म से धर्म, गरीबों को न्याय, सभी को समान अधिकार और सभी जीवों पर दया की भावना को अमल करने की ओर प्रेरित करता है।

मन का आईना

खूबसूरत हैं जिंदगी के फसलफे तेरे,
अपना नजरिया बदल कर देख।
पहलू दूसरा भी है हर सिक्के का,
हाथ का अपना सिक्का बदल कर देख।।
पतझड़ों में वीरान घर के आंगन को,
लगेगा खूबसूरत फिर बुहार कर देख।
धार में डगमग डोलती इस नाँव को,
हो जाएगी पार हौसले से लगा कर देख।।
हादसों के जो रिश्ते जख्म हैं गहरे भरेंगे,
प्रेम का महरम उन पर लगाकर देख।
गैरों से क्या अपनों से भी हैं जो दूरियाँ,
सिमट जाएगीं संवाद जरा उनसे बढ़ाकर देख।।
मत लगाओ तोहमत सदा दूसरों पर ही,
चेहरा अपना भी जरा आईने में देख।
हो जाएगा आत्म दीदार परवरदिगार का,
अपने मन का हूजरा बुहार कर देख।।
मौसम मधुमास का प्रकृति है मदमस्त,
खिले रंग-बिरंगे फूलों में मन का उल्लास देख।
खुदगर्जी के अहंकार पर विनम्र विजय का,
पर्व रंगों का होली प्रेम से मन को रंगकर देख।।
भुला दे मन के सब गिले शिकवे पुराने,
नए अंदाज में सबको गले लगाकर देख।
दुनिया बहुत खूबसूरत है बिखरे मजे उसमें,
फैला आँचल प्यार का उन्हें समेट कर देख।
हलचलो का दौर है भीड़ बेशुमार,
अपनी पहचान स्वयं बनकर देख।
हो सके तो लगी आग जंगल में,
चोंच भर डाल पानी, बुझा कर देख।।

-राजपाल सिंह कसाना

पंच परिवर्तन

एक नगर में विवेक नाम का युवक रहता था। वह पढ़ा-लिखा, सफल तथा आधुनिक था। परन्तु उसका जीवन केवल अपने तक सीमित था। उसे लगता था कि ''मैं ठीक हूँ तो सब ठीक है।'' एक दिन वह एक कार्यक्रम में गया, जहां राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के एक वरिष्ठ कार्यकर्ता पांच परिवर्तन की बात कर रहे थे जो इस प्रकार हैं - पर्यावरण, कुटुंब प्रबोधन, स्व का आत्मबोध, सामाजिक समरसता और नागरिक कर्तव्य। तो विवेक ने सोचा कि देखते हैं, इन बातों में कितना दम है।

1. पर्यावरण - एक दिन मोहल्ले में पौधरोपण हुआ। विवेक भी उसमें शामिल हुआ। पेड़ लगाते समय वहां एक छोटे से बालक ने किसी से पूछा कि "भैया, जब यह पेड़ बड़ा होगा तब आप यहां होंगे ना?" उनकी बात सुनकर विवेक चौंक गया। पहली बार उसने सोचा- हम धरती से लेते ही लेते हैं, देते क्या हैं? उस दिन से उसने प्लास्टिक कम किया, पानी बचाया और हर वर्ष पेड़ लगाने लगा।

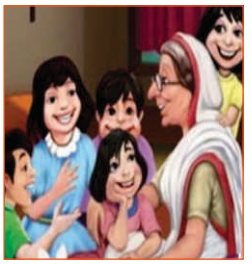

2. कुटुंब प्रबोधन - पहले घर में सब अपने-अपने मोबाइल में व्यस्त रहते थे। एक दिन उसने तय किया कि रात को सब एक साथ बैठकर खाना खायेंगे, फिर दादी की कहानी सुनेंगे, बच्चों की हँसी, माता-पिता का अनुभव आदि से फिर से घर, घर बन गया। उसे समझ आया- सशक्त समाज की शुरुआत सशक्त परिवार से होती है।

3. स्व का आत्मबोध - विवेक जब बाजार गया तो उसने देखा कि बाजार में विदेशी वस्तुएं अधिक थी और स्थानीय कारीगर उदास। तब उसने निश्चय किया कि जितना संभव हो स्वदेशी ही अपनाऊँगा। खादी के वस्त्र, स्थानीय उत्पाद और देशी व्यापार। धीरे-धीरे उसके मित्र भी उससे प्रेरित हुए। इसके बाद विवेक एक शिविर में गया तो वहां किसी ने प्रश्न पूछा गया कि "मैं कौन हूँ? केवल शरीर, पद और पैसा या कुछ अधिक?" जबाव सुनकर विवेक ने पहली बार स्वयं को पहचाना कि मैं इस राष्ट्र का अंग हूँ, संस्कृति का वाहक हूँ, समाज का उत्तरदायी नागरिक हूँ। इस आत्मबोध ने उसके जीवन की दिशा बदल दी।

4. सामाजिक समरसता- विवेक नगर के दो मोहल्लों में गए। एक जगह लोग जाति-भेद में उलझे थे, झगड़े और तनाव था। दूसरी जगह सभी मिल-जुलकर त्योहार मनाते, एक-दूसरे की मदद करते थे वहां खुशहाली थी। संघ के वरिष्ठ कार्यकर्ता बोले- "जहां भेद है वहां तनाव है, जहां समरसता है वहां शक्ति है। समाज एक परिवार है- सब साथ होंगे तभी आगे बढ़ेंगे।" विवेक समझ गया कि समरस समाज ही मजबूत समाज है।

5. नागरिक कर्तव्य - पहले तो विवेक सोचता था - 'सरकार सब करे।' अब उसने सोचा कि 'देश मेरा है, जिम्मेदारी भी मेरी है।' स्वच्छता अभियान, मतदान, यातायात नियम, समाज सेवा में वह सक्रिय नागरिक बन गया।

संदेश - कुछ महीनों बाद उसके मित्रों ने पूछा- 'विवेक, तुम इतना कैसे बदल गए?' विवेक मुस्कुराया- मैंने दुनिया बदलने की कोशिश नहीं की। बस स्वयं में पाँच परिवर्तन कर लिए- पर्यावरण, कुटुंब प्रबोधन, स्व का आत्मबोध, सामाजिक समरसता और नागरिक कर्तव्य।

जब व्यक्ति बदलता है →परिवार बदलता है

परिवार बदलता है →समाज बदलता है

समाज बदलता है →राष्ट्र बदलता है।

यही पाँच परिवर्तन एक, संस्कारित और जागरूक भारत का मार्ग प्रशस्त करेंगे।

संकलन : प्रकाशवीर जी, पूर्व प्रधानाचार्य, सरस्वती शिशु मंदिर

अभाविप छात्रशक्ति से राष्ट्रनिर्माण तक

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (ABVP) की स्थापना 1949 में ऐसे समय में हुई, जब स्वतंत्र भारत अपनी शैक्षिक और वैचारिक दिशा निर्धारित कर रहा था। इस संगठन को आकार देने में बलराज मधोक तथा प्रो. यशवंतराव केलकर जैसे प्रेरक व्यक्तित्वों की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही। परिषद का मूल मंत्र "ज्ञान–शील–एकता" केवल शब्द नहीं, बल्कि उसकी कार्यसंस्कृति और जीवनदृष्टि का आधार है।

परिषद का प्रमुख उद्देश्य विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के साथ–साथ राष्ट्र के प्रति कर्तव्यबोध जागृत करना है। ABVP छात्रहितों की रक्षा, शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार, परिसर में सकारात्मक शैक्षणिक वातावरण निर्माण तथा राष्ट्रीय मूल्यों के संवर्धन के लिए सतत कार्यरत रही है। संगठन यह मानता है कि विद्यार्थी केवल डिग्री प्राप्त करने वाला वर्ग नहीं, बल्कि राष्ट्र निर्माण की सशक्त धुरी है।

संगठनात्मक स्वरूप – संगठनात्मक दृष्टि से परिषद का ढांचा अत्यंत सुव्यवस्थित है। कॉलेज इकाई से लेकर नगर, जिला, प्रांत और राष्ट्रीय स्तर तक इसकी संरचना कार्यकर्ताओं के लोकतांत्रिक सहभाग पर आधारित है। नियमित बैठकें, प्रशिक्षण वर्ग, अभ्यास वर्ग और अधिवेशन इसके कार्य को दिशा देते हैं। परिषद में कार्यकर्ता निर्माण की परंपरा विशेष रूप से उल्लेखनीय रही है, जहां दायित्व से अधिक महत्व कर्तव्य और टीम भावना को दिया जाता है।

कार्य की वर्तमान स्थिति – वर्तमान समय में ABVP शिक्षा में पारदर्शिता, नई शिक्षा नीति के प्रभावी क्रियान्वयन, कैंपस में वैचारिक संवाद, पर्यावरण संरक्षण, स्क्रीन टाइम तो एक्टिविटी टाइम, सामाजिक समरसता तथा सेवा कार्यों के माध्यम से सक्रिय भूमिका निभा रही है। आपदा के समय राहत कार्य, रक्तदान शिविर, करियर मार्गदर्शन और छात्र समस्याओं के समाधान जैसे विषयों पर परिषद निरंतर पहल कर रही है।

इस प्रकार अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद आज संगठित, राष्ट्रनिष्ठ और जागरूक छात्रशक्ति का सशक्त प्रतीक बनकर शिक्षा और समाज जीवन में सकारात्मक परिवर्तन की दिशा में अग्रसर है।

शिक्षा के क्षेत्र में विद्या भारती

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद 'राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ' के कुछ कार्यकर्ताओं तथा मनीषियों का चिंतन था, कि देश में भारत केंद्रित शिक्षा पद्धति विकसित करने की दृष्टि से एक ऐसी शिक्षा व्यवस्था, जिसमें सनातन वैदिक चिंतन परंपरा, भारतीय जीवन मूल्यों एवं संस्कार परक शिक्षा की व्यवस्था हो, एक ऐसी शिक्षा व्यवस्था जो केवल किताबी ना हो बल्कि उसमें जीवन के व्यवहार, समाज के आचरण और समस्त सृष्टि के लिए स्नेह भाव हो, एक ऐसी शिक्षा व्यवस्था जो सदियों से चले आ रहे भारतीय परिवारों के संस्कारों को प्रबल और प्रगाढ़ बना सके। इसी विचार को साकार करने के लिए उत्तर प्रदेश में संघ के प्रांत प्रचारक मान. श्री भाऊराव देवरस जी, श्रद्धेय नानाजी देशमुख, गीता प्रेस गोरखपुर के संस्थापक संपादक श्रद्धेय हनुमान प्रसाद पोद्दार जी तथा श्री कृष्णचंद्र गांधी जी आदि की प्रेरणा व सद्प्रयासों से 07 जुलाई 1952 को उत्तर प्रदेश के गोरखपुर में प्रथम विद्यालय का शुभारंभ हुआ। शिक्षा की अधिष्ठात्री देवी मां सरस्वती के नाम पर 'सरस्वती' तथा मां के चरणों में बैठकर साधना करने वाले आचार्य, अभिभावक, भैया /बहन अथवा प्रबंध कार्यकारिणी सभी मां के लिए तो 'शिशु' ही हैं, तथा शांत वातावरण में एकाग्रचित बैठकर जहां साधना की जाती है उसे 'मंदिर' कहते हैं। इस प्रकार विद्यालय का नामकरण उपरोक्त तीनों नामों की सार्थकता को जोड़ते हुए 'सरस्वती शिशु मंदिर' रखा गया।

सरस्वती शिशु मंदिर में शिक्षा, संस्कार व संस्कृति के भाव को देखते हुए धीरे–धीरे उत्तर प्रदेश के अनेक शहरों से होते हुए देश के अन्य प्रांतों में भी इनका शुभारंभ होने लगा। विद्यालयों की बढ़ती संख्या को देखते हुए उनके प्रबंधन की दृष्टि से 1977 में 'विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान' की स्थापना हुई।

संगठनात्मक स्वरूप - विद्यालय इकाई पर उसके प्रबंधन की दृष्टि से स्थानीय प्रबंध समिति गठित रहती है तथा प्रबंध समितियों की देखरेख तथा सभी विद्यालयों को एक स्वरूप प्रदान करने की दृष्टि से प्रांत व क्षेत्र स्तर पर अलग–अलग समितियां रहती हैं। वर्तमान में देश भर में प्रांतीय व क्षेत्रीय स्तर पर विद्या भारती से संलग्न कुल 66 समितियां कार्यरत हैं।

वर्तमान कार्य की स्थिति - विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान आज विश्व का सबसे बड़ा गैर सरकारी शिक्षण संस्थान है। लक्षद्वीप व मिजोरम को छोड़कर देश के कोने–कोने में नगरीय व ग्रामीण क्षेत्रों के साथ–साथ वनवासी, गिरीवासी व अनेक अभावग्रस्त दुर्गम क्षेत्रों में भी विद्या भारती के विद्यालयों के माध्यम से शिक्षा की उत्तम व्यवस्था है। सभी विद्यालयों में बालक के सर्वांगीण विकास की दृष्टि से 5 केंद्रीय आधारभूत विषयों (शारीरिक शिक्षा, योग शिक्षा, संगीत शिक्षा, संस्कृत शिक्षा तथा नैतिक एवं आध्यात्मिक शिक्षा) के साथ–साथ क्षेत्रीय भाषाओं में भी सभी विषयों की शिक्षा प्रदान की जाती है। वर्तमान में विद्या भारती के अंतर्गत कुल 22,036 शिक्षण संस्थानों में 35,33,922 भैया/बहिन 1,53,840 कुशल व प्रशिक्षित आचार्यों की देखरेख में संस्कार युक्त शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं।

संकलन : प्रकाशवीर जी, पूर्व प्रधानाचार्य, सरस्वती शिशु मंदिर

हिंदू जाति का सुख ही मेरा और मेरे परिवार का सुख है। हिंदू जाति पर आने वाली विपत्ति हम सभी के लिए महासंकट है और हिंदू जाति का अपमान है। ऐसी आत्मीयता की हिंदूमात्र के रोम-रोम में व्याप्ती होनी चाहिए। यहीं राष्ट्रधर्म का मूलमंत्र हैं।

- डॉ. केशवराव हेडगेवार

जगद्गुरु श्रीशंकराचार्य के समान हमें भी शंख फूंककर कहना होगा कि जिसके कान में शंखध्वनि पड़ी, वह हिंदू हो गया। आज तो हम इतना ही जानते हैं कि हम हिंदू हैं। हमारी समान श्रद्धाएँ हैं, परंपराएँ हैं, श्रेष्ठ महापुरुषों के समान जीवन आदर्श हैं। - श्री गुरुजी

हमें संघ के स्वयंसेवक में यह विश्वास बढ़ाना है कि वह संघ के अधिकारी से कोई भी बात खुलकर कह सकता है। मैं स्वयं इस दिशा में कोशिश करता हूं। मैं बौद्धिक वर्ग न लेकर स्वयंसेवकों से चर्चा करता हूं। मेरा कार्यक्रम ऐसा होता है कि वे सवाल पूछें और मैं उनका उत्तर दूं।

-बाला साहब देवरस

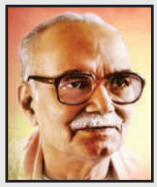

जहां मेरा शरीर शांत हो, वहीं मेरा अंतिम संस्कार किया जाए। वह भी मातृभूमि भारत का ही तो हिस्सा होगा अकारण शव इधर–उधर ले जाने की आवश्यकता नहीं है।

–रज्जू भैय्या

जिस राष्ट्र की अर्थनीति उसकी संस्कृति और समाज के अनुकूल न हो, वह आत्मघाती मार्ग पर चल रहा होता है।

-कु. सी. सुदर्शन

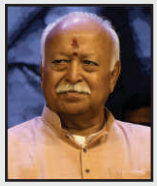

हमारा राष्ट्र धर्म प्राण राष्ट्र है। धर्म हमारे आचरण का हिस्सा है। इसके लिए संस्कार की आवश्यकता थी। पीढ़ी दर पीढ़ी मानवीय आदतें बनाई गई, यही संस्कार है और इससे ही संस्कृति बनी। इसी संस्कृति के आधार पर राष्ट्र का निर्माण हुआ। -डॉ. मोहन भागवत

"पिछले एक दशक में भारत की वित्तीय प्रणाली में एक महत्वपूर्ण क्रांति हुई है। बैंक खातों में प्रत्यक्ष लाभ अंतरण और किसानों, छोटे दुकानदारों और महिलाओं द्वारा डिजिटल भुगतान आम बात हो गई है। उनके लिए, 'फिनटेक' (फाइनेंशियल टेक्नोलॉजी) केवल एक तकनीक नहीं है, बल्कि यह उनके जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन गया है।"

– राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु, भुवनेश्वर, उड़ीसा

"प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने असम के डिब्रूगढ़ में पूर्वोत्तर की पहली आपातकालीन लैंडिंग सुविधा (ईएलएफ) का उद्घाटन किया। इस अवसर पर मोदी ने कहा कि यह अत्यंत गर्व का विषय है कि पूर्वोत्तर को अपनी पहली आपातकालीन लैंडिंग सुविधा मिली है। उन्होंने इसके महत्व पर जोर देते हुए कहा कि यह स्ट्रेटेजिक दृष्टि से और प्राकृतिक आपदाओं के समय अत्यंत महत्वपूर्ण सिद्ध होगी।" –प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, ELF उद्घाटन, डिब्रूगढ़

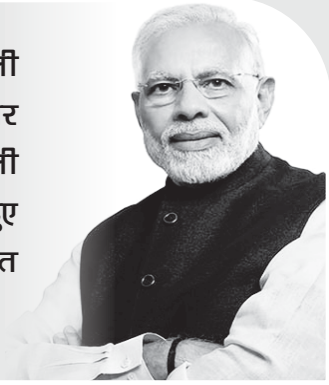

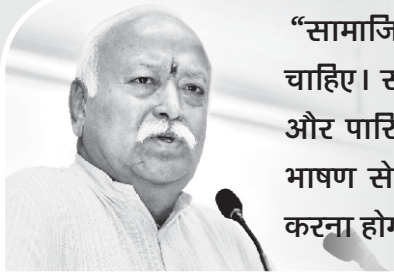

"सामाजिक समरसता के लिए व्यक्तिगत और पारिवारिक स्तर पर प्रयास होने चाहिए। संघ सारे हिन्दू समाज को एक मानता है। इसलिए हमें व्यक्तिगत स्तर पर और पारिवारिक स्तर पर आपसी मेलजोल बढ़ाना चाहिए। सामाजिक समरसता भाषण से नहीं, करने से आएगी। संघ में जात–पात नहीं है। ऐसा ही समाज में करना होगा।" –डॉ. मोहन भागवत, कार्यकर्ता कुटुंब मिलन, लखनऊ

"देश हमें देता है सब कुछ, हम भी तो कुछ देना सीखें', यह हम सभी का मूलमंत्र होना चाहिए। भारत के बारे में दृष्टि सही होनी चाहिए। आज भारत को महान कैसे बना सकते हैं, यह विचारणीय विषय है। देश के सभी महापुरुषों ने ऊंच–नीच का भेदभाव छोड़ने के लिए कहा है। उद्योग, व्यापार, शिक्षा सभी क्षेत्रों में भारतीयता दिखनी चाहिए। भारत की सांस्कृतिक एकता महत्वपूर्ण है। इसके लिए मिलजुल कर प्रयास करना होगा। पर्यावरण की रक्षा करने के साथ–साथ भावी पीढ़ी को अच्छा नागरिक बनाना हम सभी का कर्तव्य है।"

–दत्तात्रेय होसबाले, युवा संवाद, प्रयागराज

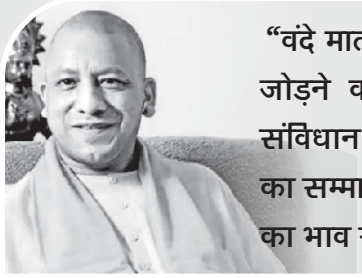

"वंदे मातरम राष्ट्रगीत है, भारत की आजादी का मंत्र रहा है. जो गीत समग्र भारत को जोड़ने का काम किया था. राष्ट्रगीत, राष्ट्रगान, राष्ट्रध्वज का अपमान भारतीय संविधान का अपमान है और यह राष्ट्रद्रोह है. हम सबका दायित्व है कि राष्ट्रीय प्रतीकों का सम्मान करें और संविधान की व्यवस्था के अंतर्गत संवैधानिक प्रमुखों के प्रति आदर का भाव रखें।" –मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, विधान परिषद्, बजट सत्र

‘शतक’ विचार, विरासत और राष्ट्रभाव की सिनेमाई गाथा’

श्रेयांशी
शोध छात्रा, चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय (मेरठ)

शतक केवल एक फिल्म नहीं, बल्कि एक वैचारिक दस्तावेज है। एक ऐसी सिनेमाई यात्रा जो राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के शताब्दी वर्ष को स्मरण करते हुए उसके उद्भव, विस्तार और वैचारिक आधार को परदे पर साकार करती है। यह प्रस्तुति केवल इतिहास का पुनर्पाठ नहीं, बल्कि भारतीय सनातन संस्कृति, त्याग, संगठन–शक्ति और राष्ट्रभक्ति के भाव को जनमानस में पुनर्स्थापित करने का प्रयास है।

फिल्म का प्रारंभ भगवा ध्वज की प्रतीकात्मक महिमा से होता है–वह ध्वज जिसके तले छत्रपति शिवाजी महाराज ने हिंदवी स्वराज का स्वप्न साकार किया। यही भगवा, बालक केशव बलिराम हेडगेवार के अंतर्मन में राष्ट्रभाव की ज्वाला प्रज्वलित करता है और आगे चलकर 27 सितंबर 1925, विजयदशमी के पावन दिवस पर संघ स्थापना का आधार बनता है। फिल्म इस ऐतिहासिक क्षण को केवल घटना नहीं, बल्कि युग–संकल्प के रूप में प्रस्तुत करती है।

निर्माता वीर कपूर और निर्देशक आशीष माल की यह कृति हेडगेवार जी के जीवनवृत्त को तीव्र, किन्तु प्रभावी गति से उकेरती है। प्लेग के कारण माता–पिता के निधन की करुण पृष्ठभूमि, बालकृष्ण शिवराम मुंजे का संरक्षण, वंदे मातरम् के उद्घोष पर विद्यालय से निष्कासन, कोलकाता में चिकित्सा–शिक्षा और क्रांतिकारी संगठन अनुशीलन समिति से जुड़ाव से सभी प्रसंग उनके व्यक्तित्व की दृढ़ता, साहस और राष्ट्रनिष्ठा को सशक्त रूप से रेखांकित करते हैं।

फिल्म में बाल गंगाधर तिलक से प्रेरणा, कांग्रेस में सक्रियता, असहयोग आंदोलन में सहभागिता और ब्रिटिश शासन द्वारा कारावास जैसे प्रसंगों के माध्यम से उस युग की वैचारिक उथल–पुथल को दर्शाया गया है। मालाबार विद्रोह के पश्चात वैचारिक मंथन और कांग्रेस से मोहभंग के बाद संघ स्थापना को निर्णायक मोड़ के रूप में चित्रित किया गया है। एक ऐसा मोड़, जिसने संगठन–आधारित राष्ट्रनिर्माण की दिशा को स्पष्ट किया।

फिल्म की कथा आगे बढ़ती है और लक्ष्मीबाई केलकर द्वारा राष्ट्र सेविका समिति की स्थापना, महात्मा गांधी का संघ कार्यों से प्रभावित होना, तथा संगठन की बागडोर माधवराव सदाशिव गोलवलकर (गुरुजी) को सौंपे जाने के प्रसंगों को समाहित करती है। गुरुजी के नेतृत्व में संघ का विस्तार, उस पर लगा प्रतिबंध, प्रतिबंध–निवारण के प्रयास, 1963 की गणतंत्र दिवस परेड में सहभागिता और दादरा–नगर हवेली की मुक्ति जैसे अध्यायों को फिल्म प्रभावपूर्ण ढंग से सामने लाती है।

साथ ही, मोहम्मद अली जिन्ना की मुस्लिम लीग द्वारा घोषित डायरेक्ट एक्शन डे और उससे उपजे सांप्रदायिक तनाव, कश्मीर जैसे ज्वलंत प्रश्न आदि सभी घटनाओं के माध्यम से फिल्म उस कालखंड की ऐतिहासिक जटिलताओं को उद्घाटित करती है। विनायक दामोदर सावरकर और सुभाष चंद्र बोस का उल्लेख कथा को व्यापक राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य प्रदान करता है।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस तकनीक से निर्मित दृश्यांकन फिल्म को आधुनिक प्रस्तुति देता है, जबकि संवादों में निहित ओजस्विता दर्शक के अंतर्मन को उद्वेलित करती है। पृष्ठभूमि में सुखविंदर सिंह का गाया गीत “जय जय हिंदुस्तान, भगवा है अपनी पहचान” फिल्म के भाव–संदेश को सशक्त स्वर प्रदान करता है।

‘शतक’ का अर्थ यहां केवल सौ वर्षों की यात्रा नहीं, बल्कि एक सतत प्रवाहमान संकल्प का प्रतीक है। यह फिल्म संघ के शताब्दी वर्ष को स्मरण करते हुए हिंदुत्व की उस अवधारणा को रेखांकित करती है, जो भारतीय सनातन संस्कृति के गौरव, आत्मबल और संगठन–शक्ति को केंद्र में रखती है। यह जनमानस को यह संदेश देती है कि राष्ट्र केवल भौगोलिक सीमाओं का नाम नहीं, बल्कि साझा संस्कृति, परंपरा और मूल्यों की चेतना है।

समग्रतः ‘शतक’ एक ऐसी सिनेमाई प्रस्तुति है, जो इतिहास, विचार और संगठन–शक्ति को एक सूत्र में पिरोते हुए दर्शक को अपनी जड़ों से जुड़ने, राष्ट्र के प्रति कर्तव्यबोध जगाने और सनातन सांस्कृतिक अस्मिता पर गर्व करने की प्रेरणा देती है। यह केवल अतीत का स्मरण नहीं, बल्कि भविष्य के लिए संकल्प का उद्घोष है। एक शताब्दी का सार और आने वाले शतक की प्रस्तावना। ■

बुद्धिमान मशीनें, निर्णायक भविष्य

आभाशु द्विवेदी
शोध छात्र

कल्पना कीजिए आपका डिजिटल संस्करण शांत भाव में एक बैठक में बैठा है। वह आपकी आवाज में बोल रहा है, आपकी तरह व्यवहार कर रहा है और आपके जैसे ही सुझाव दे रहा है। यही है आज का आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, जो अब सिर्फ सवालों के जवाब तक सीमित नहीं है। जेनरेटिव एआई के दौर में वह चित्र बना रहा है, वीडियो तैयार कर रहा है और केवल एक प्रॉम्प्ट पर किसी भी कहानी को आपके सामने प्रस्तुत कर रहा है।

वीडियो अवतार प्लेटफॉर्म जैसे HeyGen का इस्तेमाल करके हम अपना डिजिटल अवतार बना सकते हैं। वह आपके शोध का साथी भी है, आपके निर्णय पैटर्न को समझकर मार्गदर्शन देने वाला भी है और आपके दोहराए जाने वाले कार्य, जैसे शेड्यूलिंग और ईमेलिंग, स्वयं संभालकर आपके काम को आसान बना सकता है। यह परिवर्तन केवल तकनीकी सुविधा नहीं, बल्कि कार्यप्रणाली का पुनर्निर्माण है।

हाल ही में भारत मंडपम में हुए एआई समिट में भारत ने विश्व के सामने एआई को लेकर अपना दृष्टिकोण स्पष्ट किया। Bhashini जैसे राष्ट्रीय भाषा प्लेटफॉर्म दर्शाते हैं कि एआई को शासन, भाषा और समावेश से जोड़ा जा रहा है। ह्यूमनॉइड रोबोट और स्मार्ट गवर्नेंस डैशबोर्ड इस बात का संकेत हैं कि देश एआई को प्रयोगात्मक नहीं, बल्कि व्यावहारिक स्तर पर लागू कर रहा है।

वर्तमान भारत ने यह स्पष्ट किया है कि हम एआई को केवल सीख नहीं रहे, बल्कि उसे विकसित भी कर रहे हैं। हम एआई के माध्यम से भारत को और सशक्त बनाने की दिशा में आगे बढ़ रहे हैं। एआई अब वह पूंजी है जिसके बिना भविष्य की कल्पना अधूरी है। लेकिन यह भी याद रखना आवश्यक है कि तकनीक सक्षम हो सकती है, पर दिशा और जिम्मेदारी अब भी हमारे हाथ में ही है।

■

एआई इम्पैक्ट की विजेता सृष्टि श्रीवास्तव और इनफीहील की प्रेरक उड़ान

मानस वर्मा
प्राध्यापक अर्थशास्त्र, महाराजा अग्रसेन कॉलेज
दिल्ली विश्वविद्यालय

भारत का युवा अब केवल नौकरी खोजने वाला नहीं, बल्कि समाधान गढ़ने वाला युवा है। इसी नई सोच की सशक्त प्रतीक हैं सृष्टि श्रीवास्तव, जिन्होंने अपने स्टार्टअप Infiheal के माध्यम से मानसिक स्वास्थ्य के क्षेत्र में नई क्रांति की शुरुआत की है। वर्ष 2026 में India AI Impact Summit में AI for All Global Impact Challenge जीतकर राष्ट्रीय स्तर पर पहचान बनाई और सभी युवाओं के लिए प्रेरणा स्त्रोत बनी।

सृष्टि की इस यात्रा की शुरुआत उनके छात्र जीवन के दौरान हुई, जब उन्होंने महसूस किया कि भारत में मानसिक स्वास्थ्य को लेकर जागरूकता कम है और सहायता तक पहुंच उससे भी कम। छोटे शहरों और ग्रामीण इलाकों में लोग अपनी भावनात्मक परेशानियों को व्यक्त करने से हिचकते हैं। यही विचार उनके मन में बार-बार उठता रहा, "क्या तकनीक के माध्यम से इस दूरी को कम किया जा सकता है?"

इसी प्रश्न ने Infiheal को जन्म दिया। सृष्टि ने विशेषज्ञों, मनोवैज्ञानिकों और तकनीकी साथियों के साथ मिलकर एक AI-आधारित प्लेटफॉर्म विकसित किया, जो लोगों को सुरक्षित और सहज वातावरण में मानसिक सहयोग प्रदान कर सके। उनका उद्देश्य केवल एक ऐप बनाना नहीं था, बल्कि ऐसा डिजिटल साथी तैयार करना था जो भारतीय संदर्भ, भाषाओं और भावनात्मक जरूरतों को समझ सके।

Infiheal और AI Impact Summit – प्रमुख आँकड़े

श्रेणी	आँकड़ा / तथ्य
संस्थापक	श्रिस्ति श्रीवास्तव
स्टार्टअप का नाम	Infiheal
कार्यक्षेत्र	AI आधारित मानसिक स्वास्थ्य समाधान
पुरस्कार	AI for All – Global Impact Challenge विजेता
मंच	India AI Impact Summit 2026
कुल आवेदन	10,000+ स्टार्टअप्स
प्राप्त पुरस्कार राशि	₹25 लाख
तकनीकी उत्पाद	AI मानसिक स्वास्थ्य प्लेटफॉर्म (Healo)
लक्ष्य	मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं को सुलभ और किफायती बनाना
फोकस क्षेत्र	छोटे शहर और वंचित समुदाय
विशेषता	भारतीय भाषाओं व सांस्कृतिक संदर्भ आधारित AI समाधान

शुरुआत आसान नहीं थी। संसाधनों की कमी, तकनीकी चुनौतियां और सामाजिक संवेदनशीलता जैसी कठिनाइयां हर कदम पर थीं। लेकिन सृष्टि को विश्वास था कि यदि उद्देश्य मानवीय है तो रास्ते अवश्य बनेंगे। उन्हें मेंटर्स, टेक समुदाय और सरकारी नवाचार मंचों से सहयोग मिला। धीरे-धीरे उनका प्रयास एक सशक्त स्टार्टअप में बदल गया।

फिर आया वह क्षण जिसने उनकी मेहनत को राष्ट्रीय पहचान दी। 10,000 से अधिक आवेदनों में से Infiheal का चयन हुआ और सृष्टि ने राष्ट्रीय मंच पर अपनी तकनीक प्रस्तुत की। सम्मान प्राप्त करते समय उनके शब्द थे – "AI तभी सार्थक है जब वह इंसान के जीवन को बेहतर बनाए।"

आज सृष्टि श्रीवास्तव केवल एक स्टार्टअप फाउंडर नहीं, बल्कि युवा भारत के लिए प्रेरणा हैं। उनकी कहानी यह सिखाती है कि जब संवेदनशीलता, तकनीक और संकल्प एक साथ आते हैं, तब बदलाव केवल संभव नहीं, बल्कि अनिवार्य हो जाता है।

उनकी सफलता हर युवा को वहीं संदेश देती है जो भारत के माननीय प्रधानमंत्री जी भी देते हैं, कि, समस्या को अवसर में बदलना ही सच्ची उद्यमिता है।

■

मिजोरम : स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत की बढ़ती सीमाओं में संघर्ष

डॉ. अनुज सिंह
सहायक प्राध्यापक, आईआईएमटी
कॉलेज ऑफ मैनेजमेंट, ग्रेटर नोएडा

भारत ने 15 अगस्त 1947 को स्वतंत्रता प्राप्त की, लेकिन उसके बाद सबसे बड़ी चुनौती केवल शासन व्यवस्था स्थापित करने की नहीं, बल्कि अपनी सीमाओं को सुरक्षित, स्थिर और प्रभावी रूप से नियंत्रित करने की थी। विशेष रूप से उत्तर–पूर्व भारत के सीमावर्ती राज्य, जैसे मिजोरम, भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा, क्षेत्रीय अखंडता और अंतरराष्ट्रीय संबंधों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण रहे हैं।

स्वतंत्रता के समय मिजोरम असम का एक हिस्सा था, जिसे 'लुशाई हिल्स' कहा जाता था। यह क्षेत्र म्यांमार और तत्कालीन पूर्वी पाकिस्तान (अब बांग्लादेश) से घिरा हुआ था। मिजोरम की अंतरराष्ट्रीय सीमा लगभग 722 किलोमीटर लंबी है, जिसमें म्यांमार के साथ लगभग 510 किलोमीटर और बांग्लादेश के साथ लगभग 318 किलोमीटर सीमा शामिल है। इस कारण यह राज्य भारत की सीमाओं की सुरक्षा के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है।

स्वतंत्रता के बाद मिजोरम में असंतोष का प्रमुख कारण वर्ष 1959 का 'मौताम अकाल' था। इस अकाल के दौरान प्रशासन की धीमी प्रतिक्रिया से जनता में असंतोष बढ़ा और 1961 में मिजो नेशनल फ्रंट (डछथ) का गठन हुआ। इसके बाद 28 फरवरी 1966 को डछथ ने भारत सरकार के खिलाफ सशस्त्र विद्रोह शुरू किया, जिससे भारत की क्षेत्रीय अखंडता को गंभीर चुनौती मिली।

भारत सरकार ने इस स्थिति से निपटने के लिए केवल सैन्य उपायों पर निर्भर रहने के बजाय राजनीतिक समाधान का मार्ग अपनाया। 21 जनवरी 1972 को मिजोरम को केंद्रशासित प्रदेश का दर्जा दिया गया, जिससे प्रशासनिक स्वायत्तता और राजनीतिक प्रतिनिधित्व सुनिश्चित हुआ। इसके बाद लंबे संवाद और वार्ता के परिणामस्वरूप 30 जून 1986 को ऐतिहासिक 'मिजोरम शांति समझौता' हुआ। इस समझौते के बाद 20 फरवरी 1987 को मिजोरम को पूर्ण राज्य का दर्जा दिया गया और यह भारत का 23वाँ राज्य बन गया। यह घटना भारत की सीमाओं के स्थिरीकरण और राष्ट्रीय एकता की दिशा में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि थी।

आज मिजोरम न केवल भारत की सीमाओं की सुरक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है, बल्कि यह भारत की 'एक्ट ईस्ट नीति' का भी एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन गया है। विशेष रूप से जनवरी और फरवरी 2026 की घटनाएँ यह दर्शाती हैं कि मिजोरम आज भी भारत की सीमाओं की सुरक्षा और प्रबंधन के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। जनवरी 2026 तक मिजोरम में म्यांमार से आए लगभग 30,000 से अधिक शरणार्थियों का बायोमेट्रिक पंजीकरण किया गया। इस प्रक्रिया का उद्देश्य सीमा प्रबंधन को मजबूत करना और अवैध गतिविधियों पर नियंत्रण सुनिश्चित करना था। यह कदम दर्शाता है कि भारत अपनी सीमाओं की निगरानी के लिए आधुनिक तकनीक और प्रशासनिक उपायों का उपयोग कर रहा है।

फरवरी 2026 में सीमा सुरक्षा से जुड़ी कई महत्वपूर्ण घटनाएँ सामने आईं। 12 फरवरी 2026 को मिजोरम के जनप्रतिनिधियों ने केंद्र सरकार से सीमा क्षेत्रों में स्थित सड़कों को राष्ट्रीय राजमार्ग का दर्जा देने की मांग की, जिससे सुरक्षा बलों की आवाजाही और सीमा प्रबंधन को मजबूत किया जा सके। यह मांग इस तथ्य को दर्शाती है कि सीमाओं की सुरक्षा में बुनियादी ढांचे का विकास अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

इसी प्रकार, 19 फरवरी 2026 और 21 फरवरी 2026 को मिजोरम पुलिस और सुरक्षा एजेंसियों ने म्यांमार सीमा के पास मादक पदार्थों की तस्करी के खिलाफ बड़ी कार्रवाई करते हुए करोड़ों रुपये मूल्य के नशीले पदार्थ जब्त किए और कई तस्करों को गिरफ्तार किया। यह घटना दर्शाती है कि मिजोरम की सीमा आज भी सुरक्षा की दृष्टि से संवेदनशील है और भारत सरकार इस पर सतत निगरानी बनाए हुए है।

इसके अतिरिक्त, फरवरी 2026 में सीमा क्षेत्रों में प्रशासनिक निगरानी और सुरक्षा व्यवस्था को मजबूत करने के लिए स्थानीय प्रशासन और सुरक्षा एजेंसियों द्वारा विशेष अभियान चलाए गए। इन प्रयासों का उद्देश्य सीमा पार अवैध गतिविधियों को रोकना और राष्ट्रीय सुरक्षा को सुदृढ़ करना था। ■

रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भर भारत को दिशा देता वर्तमान रक्षा बजट

केंद्र सरकार द्वारा 1 फरवरी, 2026 को घोषित केंद्रीय बजट 2026–27 में राष्ट्रीय सुरक्षा को भारत के आधुनिकीकरण, आत्मनिर्भरता और नवाचार की प्राथमिकताओं के केंद्र में रखा गया है। रक्षा मंत्रालय को ₹7.85 लाख करोड़ का अब तक का सबसे अधिक आवंटन प्राप्त हुआ है, जो वित्त वर्ष 2025–26 के बजटीय अनुमानों (बीई) से 15.19 प्रतिशत अधिक है और केंद्रीय बजट का 14.67 प्रतिशत हिस्सा है, जो सभी मंत्रालयों में सबसे अधिक है। भारत का रक्षा बजट 2013–14 में ₹ 2.53 लाख करोड़ से बढ़कर 2026–27 में ₹ 7.85 लाख करोड़ हो गया है, जो लगभग ₹5.32 लाख करोड़ की वृद्धि दर्शाता है, यानी लगभग तीन गुना वृद्धि।

रक्षा क्षेत्र से संबंधित बजट का एक प्रमुख बिंदु तीनों सेनाओं का आधुनिकीकरण और भविष्य की क्षमताओं को बढ़ाना है। इसमें उन्नत प्लेटफार्मों, अत्याधुनिक प्रौद्योगिकियों और शक्ति गुणकों की प्राप्ति पर जोर दिया गया है।

यह बजट स्वदेशी विनिर्माण को बढ़ावा देकर और आयात पर निर्भरता कम करके आत्मनिर्भर भारत को मजबूत गति प्रदान करता है। निजी क्षेत्र के खिलाड़ियों सहित घरेलू रक्षा उद्योग इसके प्रमुख लाभार्थी हैं।

• घरेलू रक्षा उद्योगों से खरीद के लिए ₹1.39 लाख करोड़ आवंटित किए गए हैं।

• वित्त वर्ष 2026–27 में पूंजी अधिग्रहण बजट का लगभग 75 प्रतिशत हिस्सा घरेलू रक्षा उद्योगों के लिए आरक्षित है।

• रक्षा क्षेत्र की इकाइयों द्वारा रखरखाव, मरम्मत या नवीनीकरण की आवश्यकताओं के लिए उपयोग किए जाने वाले विमान के पुर्जों के निर्माण हेतु आयातित कच्चे माल पर लगने वाले मूल सीमा शुल्क से छूट दी जाएगी।

• ये उपाय घरेलू उत्पादन, निवेश और रोजगार सृजन को बढ़ावा देते हैं।

रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) के लिए बजटीय आवंटन वित्त वर्ष 2025–26 के ₹26,816.82 करोड़ से बढ़ाकर वित्त वर्ष 2026–27 में ₹29,100.25 करोड़ कर दिया गया है। इस आवंटन में से एक बड़ा हिस्सा यानी ₹17,250.25 करोड़ पूंजीगत व्यय के लिए आवंटित किया गया है। इसके साथ ही, केंद्र सरकार ने रक्षा विनिर्माण में अनुसंधान एवं विकास को बढ़ावा देने के लिए कई उपाय लागू किए हैं।

केंद्रीय बजट 2026–27, ऑपरेशन सिंदूर की ऐतिहासिक सफलता के बाद पहला केंद्रीय बजट है , जो आधुनिकीकरण, आत्मनिर्भरता और नवाचार के माध्यम से राष्ट्रीय सुरक्षा को मजबूत करने पर सरकार के निरंतर ध्यान को दर्शाता है। स्वदेशी रक्षा विनिर्माण को बढ़ावा देने, अनुसंधान और अवसंरचना में लक्षित निवेश करने और पूर्व सैनिकों के कल्याण को निरंतर प्राथमिकता देने के साथ, रक्षा क्षेत्र का बजट अधिक सुरक्षित और लचीले भारत का वादा करता है, जो 2047 तक विकसित भारत के दीर्घकालिक दृष्टिकोण के अनुरूप है।

■

1 मार्च, क्रांतिकारी गोपी मोहन साहा बलिदान दिवस

पुलिस अधिकारी टेगार्ट ने अपनी रणनीति से बंगाल के क्रान्तिकारी आन्दोलन को काफी नुकसान पहुँचाया। उसके कारण अनेक प्रमुख क्रान्तिकारी या तो फाँसी पर चढ़ा दिये गए थे या जेलों में सड़ रहे थे। ऐसे समय में क्रान्तिकारी गोपी मोहन साहा ने टेगार्ट से बदला लेने का प्रयास किया। दो जनवरी, 1924 को उन्होंने गलती से टैगार्ट जैसे दिखने वाले किसी अन्य व्यक्ति की हत्या कर दी। इस घटना में वे पकडे गये। पकड़े जाने पर उसे पता लगा कि उसने जिस अंग्रेज को मारा है, वह टेगार्ट नहीं अपितु उसकी शक्ल से मिलता हुआ एक व्यापारिक कम्पनी का प्रतिनिधि है. इससे उन्हें बहुत दु:ख हुआ। न्यायालय में अपना बयान देते समय उसने टेगार्ट को व्यंग्य से कहा कि आप स्वयं को सुरक्षित मान रहे हैं; पर यह न भूलें कि जो काम मैं नहीं कर सका, उसे मेरा कोई भाई शीघ्र ही पूरा करेगा। उन पर अनेक आपराधिक धाराएं थोपीं गयीं। इस पर उन्होंने न्यायाधीश से कहा कि कंजूसी क्यों करते हैं, दो–चार धाराएं और लगा दीजिये। 16 फरवरी, 1924 को उन्हें फाँसी की सजा सुनाई गई। सजा सुनकर उसने गर्व से कहा, ''मेरी कामना है कि मेरे रक्त की प्रत्येक बूँद भारत के हर घर में आजादी के बीज बोए। जब तक जलियाँवाला बाग और चाँदपुर जैसे काण्ड होंगे, तब तक हमारा संघर्ष भी चलता रहेगा. एक दिन ब्रिटिश शासन को अपने किये का फल अवश्य मिलेगा.'' एक मार्च, 1924 को भारत माँ के अमर सपूत गोपी मोहन साहा ने फाँसी के फन्दे को चूम लिया। फाँसी के बाद उसके शव को लेने के लिए गोपी के भाई के साथ नेताजी सुभाषचन्द्र बोस भी जेल गए थे।

3 मार्च, पुण्यतिथि : राष्ट्रऋषि डॉ. बालकृष्ण शिवराम मुंजे

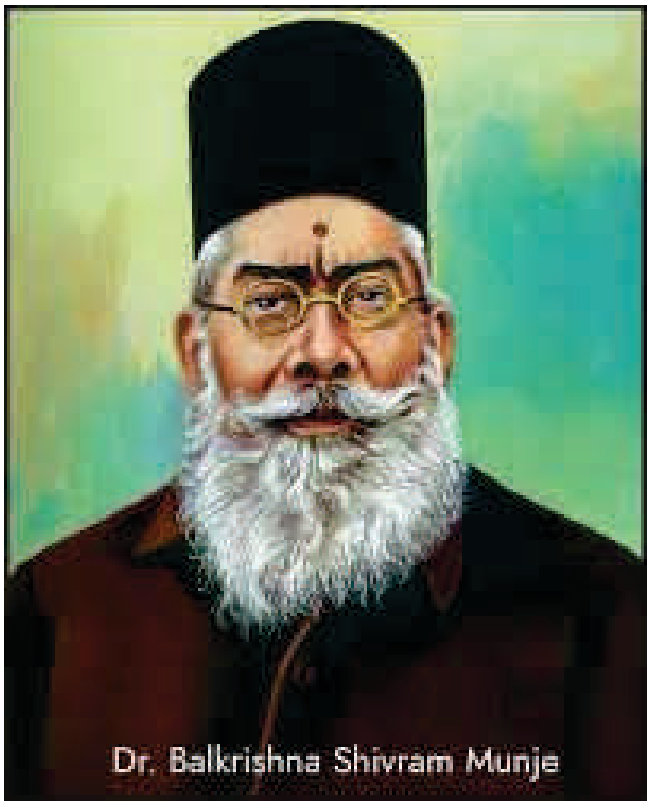

डॉ बालकृष्ण शिवराम मुंजे भी ऐसे महान स्वतंत्रता सेनानी नायकों में हैं जिनके संजोए सपने पर आज देश बड़ी सैन्य ताकत बन चुका है। पेशे से नेत्र विशेषज्ञ एवं स्वतंत्रता सेनानी डॉ. मुंजे ने एक ऐसी सेना बनाने स्वप्न देखा था जो देश को सर्वोच्च मजबूती दे। देश की आजादी के लिए उन्होंने बोम्बे म्युनिसिपल कॉर्पोरेशन से मेडिकल ऑफिसर की प्रतिष्ठित नौकरी छोड़ दी थी। 1921 में मोपलाओं द्वारा केरल में किये गए भीषण अत्याचारों का उन्होंने स्वामी श्रद्धानन्द के साथ केरल में जाकर विरोध किया था। उन्होंने 1934 में सेंट्रल हिंदू मिलिट्री एजुकेशन सोसाइटी की स्थापना की। 1927 में एयरो क्लब ऑफ इंडिया के संस्थापक सदस्य, 1929 में रायफल क्लब के संस्थापक सदस्य, 1933 में इंडियन मिलिटरी अकेडमी देहरादून के संस्थापक सदस्य थे। देश के युवाओं को शस्त्र प्रशिक्षण देने हेतु उन्होंने 1937 में भोंसला मिलिटरी स्कूल, नासिक की स्थापना की। उनके द्वारा युवतियों को भी रायफल चलाने का प्रशिक्षण दिया जाता था। वह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संस्थापक और महान क्रान्तिदृष्टा डॉ. केशवराव हेडगेवार के संरक्षक, मार्गदर्शक एवं राजनैतिक गुरु थे। वे एक संस्कृत विद्वान होने के साथ ही वीर सावरकर, बाल गंगाधर तिलक एवं

श्री अरविन्द के घनिष्ठ साथी थे। उन्होंने हिन्दू महासभा के अध्यक्ष के रूप में इसे सशक्त करने में मुख्य भूमिका निभाई थी। सामाजिक समरसता तथा जातिप्रथा उन्मूलन के लिए भी उन्होंने जन जागरण किया। छलपूर्वक मतांतरित किये गए अपने बंधुओ को वापस हिन्दू धर्म में लाने के लिए देवल संहिता का अध्ययन करके उन्होंने शुद्धिकरण की एक प्रक्रिया बनाई और हजारो बंधुओ को वापस हिन्दू धर्म में लाया। अपने शत्रु का शत्रु अपना तात्कालिक मित्र इस सिद्धांत के अनुसार बेनिटो मुसोलिनी से 1931 में उन्होंने भेंट की थी इसी सिद्धांत के अनुसार नेताजी सुभाष चंद्र बोस की बाद में एडॉल्फ हिटलर से भेट हुई थी। 1930 तथा 1932 में लंदन में आयोजित दोनों गोलमेज परिषदों में डॉ मुंजे ने भाग लिया था। डॉ मुंजे की हिन्दू युवाओं को ब्रिटिश सेना में भर्ती हेतु प्रेरित किये जाने का ही परिणाम था कि सुभाष बाबू को आजाद हिन्द सेना के लिए बड़ी मात्रा में प्रशिक्षित सैनिक मिले। जब डॉ. आंबेडकर अपना धर्म परिवर्तन करना चाहते थे तब डॉ. मुंजे ने ही उन्हें भारतीय मूल के मत में मतांतरित होने का परामर्श दिया था।

4 मार्च, पुण्यतिथि - लाला हरदयाल

क्रांतिवीर एवं प्रबुद्ध लेखक लाला हरदयाल ने मास्टर अमीर चन्द, भाई बाल मुकुन्द के साथ दिल्ली में युवकों के क्रांतिकारी दल का गठन किया था। लाहौर में उनके दल में लाला लाजपत राय जैसे युवक सम्मिलित थे। छात्रवृत्ति मिलने पर वे अध्ययन के लिए लंदन चले गए। उन्होंने अनेक पुस्तकें लिखी एवं समाचार पत्रों का संपादन किया। जब ब्रिटिश सरकार उन्हें गिरफ्तार करने की योजना बनाने लगी तो वे पेरिस चले गये। वहां क्रांतिकारी श्याम कृष्णा वर्मा और भीकाजी कामा पहले से ही थे। लाला हरदयाल ने वहाँ जाकर 'वन्दे मातरम्' और 'तलवार' नामक पत्रों का सम्पादन किया। 1910 ई. में वे सेनफ़्राँसिस्को, अमेरिका पहुँचे। वहाँ उन्होंने भारत से गए मज़दूरों को संगठित किया। 'ग़दर' नामक पत्र निकाला और 1913 में प्रसिद्ध क्रांतिकारी संस्था ग़दर पार्टी की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। ग़दर पार्टी का जन्म अमेरिका के सैन फ्रांसिस्को के श्एस्टोरियाश में अंग्रेजी साम्राज्य को जड़ से उखाड़ फेंकने के उद्देश्य से हुआ। ग़दर पार्टी के संस्थापक अध्यक्ष क्रांतिकारी सोहन सिंह भकना थे। लाला हरदयाल महामंत्री थे। 'ग़दर' पत्र ने संसार का ध्यान भारत में अंग्रेज़ों के द्वारा किए जा रहे अत्याचार की ओर दिलाया। इस दल की कनाडा, चीन, जापान आदि में शाखाएँ खोली गईं। लाला हरदयाल इसके महासचिव थे। प्रथम विश्वयुद्ध आरम्भ होने पर लाला हरदयाल ने भारत में सशस्त्र क्रान्ति को प्रोत्साहित करने के लिए क़दम उठाए। 1915 ई. में जर्मनी से दो जहाज़ों में भरकर क्रांतिकारियों के लिए बन्दूक़ें बंगाल भेजी गईं, परन्तु मुखबिरों की सूचना पर दोनों जहाज़ जब्त कर लिए गए।

जर्मनी में वे कुछ समय तक नज़रबन्द भी रहे। वहाँ से वे स्वीडन चले गए, जहाँ उन्होंने अपने जीवन के 15 वर्ष बिताए। देश प्रेम के चलते वे अपने परिवार से दूर इतने सक्रिय थे कि उन्होंने अपनी पुत्री का मुँह भी नहीं देखा था, जो उनके भारत छोड़ने के बाद पैदा हुई थी। 4 मार्च, 1939 ई. को विदेश में ही उनका देहावसान हो गया।

22 मार्च, जयंती : महान क्रांतिकारी मास्टर सूर्य सेन

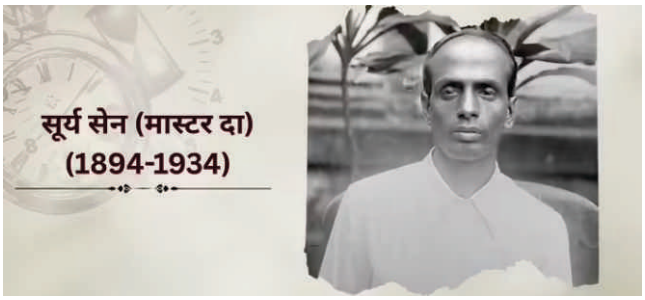

मास्टर सूर्य सेन भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के उन महान क्रांतिकारियों में से एक थे, जिन्होंने ब्रिटिश शासन के विरुद्ध सशस्त्र संघर्ष का मार्ग अपनाया। उनका जन्म 22 मार्च 1894 को चटगांव (बांग्लादेश में) हुआ था। वे शिक्षक थे, इसलिए उन्हें आदरपूर्वक "मास्टर दा" कहा जाता था।

सूर्यसेन ने युवावस्था में ही क्रांतिकारी गतिविधियों में भाग लेना प्रारंभ कर दिया था। वे 'इंडियन रिपब्लिकन आर्मी' के प्रमुख नेता बने और उन्होंने युवाओं को संगठित कर ब्रिटिश शासन को चुनौती देने का साहसिक प्रयास किया। एक रिपोर्ट के अनुसार, भारतीय क्रांतिकारी सूर्य सेन के द्वारा गठित क्रांतिकारी दल ने 1930 से 1932 तक 22 ब्रिटिश अफसरों और 200 से अधिक सहायकों का वध कर ब्रिटिश तंत्र को हिलाकर रख दिया था आजादी से 17 साल पहले 1930 में तिरंगा झंड़ा फहरा दिया था। चटगांव में 'अस्थायी क्रांतिकारी सरकार' की घोषणा कर दी थी। चार दिनों तक चटगांव अंग्रेजी शासन से आजाद रहा।

उनका सबसे प्रसिद्ध कार्य 18 अप्रैल 1930 को किया गया चटगांव शस्त्रागार कांड था। इस अभियान का उद्देश्य ब्रिटिश शासन के सैन्य और संचार तंत्र को कमजोर करना था। उनके नेतृत्व में क्रांतिकारियों ने शस्त्रागार पर कब्ज़ा किया, टेलीग्राफ लाइनों को काटा और ब्रिटिश सत्ता को अस्थायी रूप से चुनौती दी।

सूर्यसेन का योगदान केवल एक घटना तक सीमित नहीं था। उन्होंने युवाओं में देशभक्ति, साहस और बलिदान की भावना जागृत की। उनके दल में प्रीतिलता वाडेदार और कल्पना दत्त जैसी वीरांगनाएँ भी शामिल थीं, जो उस समय महिला सहभागिता का अद्भुत उदाहरण थीं।

सूर्य सेन के एक करीबी नेत्र सेन को अंग्रेजों ने अपने भरोसे में लेकर धोखे से 16 फरवरी 1933 को अंग्रेजों ने सूर्य सेन को गिरफ्तार कर लिया। फांसी से पहले क्रांतिकारी सूर्य सेन को अमानवीय यातनाएं दी गईं। रिपोर्ट्स बताती हैं कि फांसी से पहले सूर्य सेन की हड्डियों को हथौड़े से तोड़ दिया गया था और नाखून खींच लिए थे। कहा जाता कि अपने आखिरी होश में सूर्य सेन जब वंदेमातरम का नारा लगा रहे थे तो मुंह में लोहे की रोड़ फंसाकर उनके दांत उखाड़ दिए थे। इतनी यातनाएं देने के बाद, बेहोशी की हालत में 12 जनवरी 1934 को उन्हें फांसी दे दी गई। मास्टर सूर्यसेन ने फांसी के एक दिन पूर्व 11 जनवरी को अपने एक मित्र को पत्र लिखा था। जिसका अंश है –'मृत्यु मेरा द्वार खटखटा रही है। मैं सिर्फ एक चीज छोड़कर जा रहा हूं– अपना स्वप्न, स्वतंत्र भारत का स्वप्न। प्रिय मित्रो, आगे बढ़ो और अपने कदम पीछे मत खींचना। उठो और कभी निराश मत होना। सफलता अवश्य मिलेगी।'

मास्टर सूर्यसेन का जीवन त्याग, साहस और देशभक्ति का प्रतीक है। उनका संघर्ष भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के इतिहास में प्रेरणास्रोत के रूप में सदैव स्मरणीय रहेगा।

23 मार्च, बलिदान दिवस

भारत के स्वतंत्रता संग्राम में भगत सिंह, सुखदेव थापर और शिवराम राजगुरु का नाम अद्वितीय साहस और बलिदान के प्रतीक के रूप में लिया जाता है। इन तीनों क्रांतिकारियों ने युवावस्था में ही मातृभूमि की स्वतंत्रता के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया। यह तीनो उत्तर भारत की प्रमुख क्रांतिकारी संस्था 'हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन' के प्रमुख सदस्य थे।

भगत सिंह बचपन से ही देशभक्ति की भावना से ओत–प्रोत थे। उन्होंने लाला लाजपत राय की मृत्यु का बदला लेने के लिए ब्रिटिश पुलिस अधीक्षक स्कॉट को मारने योजना बनाई। किन्तु स्कॉट के स्थान पर गलत पहचान होने से सहायक पुलिस

अधीक्षक सांडर्स मारा गया। योजना में चन्द्र शेखर आजाद, सुखदेव और राजगुरु ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 17 दिसंबर

1928 को लाहौर में इस कार्रवाई को अंजाम दिया गया। राजगुरु ने सांडर्स पर पहली गोली चलाई, जबकि भगत सिंह ने उसे सुनिश्चित रूप से मार गिराया। सुखदेव ने पूरी योजना का संगठन और सहयोग प्रदान किया।

इसके बाद 8 अप्रैल 1929 को भगत सिंह और बटुकेश्वर दत्त ने केंद्रीय विधानसभा में बम फेंककर ब्रिटिश शासन के विरुद्ध आवाज उठाई। उनका उद्देश्य किसी की हत्या करना नहीं, बल्कि "बहरों को सुनाने" के लिए जोरदार धमाका करना था। उन्होंने स्वयं को गिरफ्तार कराया ताकि अपने विचारों को अदालत और जनता के सामने रख सकें। भगत सिंह की जेल डायरी और उनका लिखा साहित्य उनके जीवन को समझने के स्रोत हैं।

इन क्रांतिकारियों ने जेल में भी अत्याचारों के विरुद्ध भूख हड़ताल की और भारतीय कैदियों के अधिकारों के लिए संघर्ष किया। अंततः 23 मार्च 1931 को लाहौर जेल में तीनों को फाँसी दे दी गई। उनका बलिदान भारतीय युवाओं के लिए प्रेरणा स्रोत बन गया और स्वतंत्रता आंदोलन को नई ऊर्जा मिली। आज भी उनका जीवन देशभक्ति, साहस और त्याग का अमर उदाहरण है।

30 मार्च, पुण्यतिथि : पंडित श्यामजी कृष्ण वर्मा

पंडित श्यामजी कृष्ण वर्मा उन प्रबल राष्ट्रवादियों और देशभक्तों में से एक थे जिन्होंने इंग्लैंड में ब्रिटिश शासन से भारत की स्वतंत्रता के आंदोलन का मार्गदर्शन किया। उन्होंने क्रांतिकारियों की सहायता की और उनकी गतिविधियों के लिए एक केंद्र भारत भवन, इण्डिया हाउस स्थापित किया। श्यामजी कृष्ण वर्मा स्वामी दयानंद सरस्वती से बहुत प्रभावित थे और बंबई आर्य समाज के पहले अध्यक्ष बने और इसके माध्यम से देश के युवाओं को ब्रिटिश तंत्र के विरुद्ध लड़ने के लिए प्रेरित किया। वे बिलियोल कॉलेज में संस्कृत के सहायक प्रोफेसर नियुक्त हुए। उन्होंने अजमेर में वकालत शुरू की और एक वकील के रूप में प्रसिद्धि प्राप्त की। वे अजमेर नगर पालिका के सदस्य बने, अजमेर के दीवान और बाद में जूनागढ़ के दीवान के रूप में कार्य किया। उन्होंने श्इंडियन सोशियोलॉजिस्टश नामक एक मासिक पत्रिका का प्रकाशन शुरू किया, जो क्रांतिकारी विचारों का एक माध्यम बन गई। फरवरी 1905 में, उन्होंने भारत में ब्रिटिश प्रभुत्व के खिलाफ आवाज उठाने के लिए इंडियन होम रूल सोसाइटी की स्थापना की। विनायक दामोदर सावरकर और उनके भाई गणेश, लाला हरदयाल, बीरेन चट्टोपाध्याय, मदन लाल ढींगरा और वीवीएस अय्यर श्इंडिया हाउसश से जुड़े प्रमुख क्रांतिकारी थे। उन्होंने पर्चे प्रकाशित करके, किताबें लिखकर और भाषण देकर भारत में ब्रिटिश शासन के खिलाफ कड़ा विरोध जताया। अपनी राजनीतिक गतिविधियों के कारण उन्हें इंग्लैंड छोड़ने के लिए मजबूर होना पड़ा। वे पेरिस चले गए, जहाँ उन्होंने भारत की मुक्ति के लिए अपनी गतिविधियाँ जारी रखीं। द्वितीय विश्व युद्ध के शुरू होने के कारण वे पेरिस में नहीं रह सके और उन्हें स्विट्जरलैंड के जिनेवा जाना पड़ा, जहाँ उन्होंने अपना शेष जीवन व्यतीत किया। वे अंग्रेजी और संस्कृत सहित लैटिन भाषा के भी विद्वान थे।

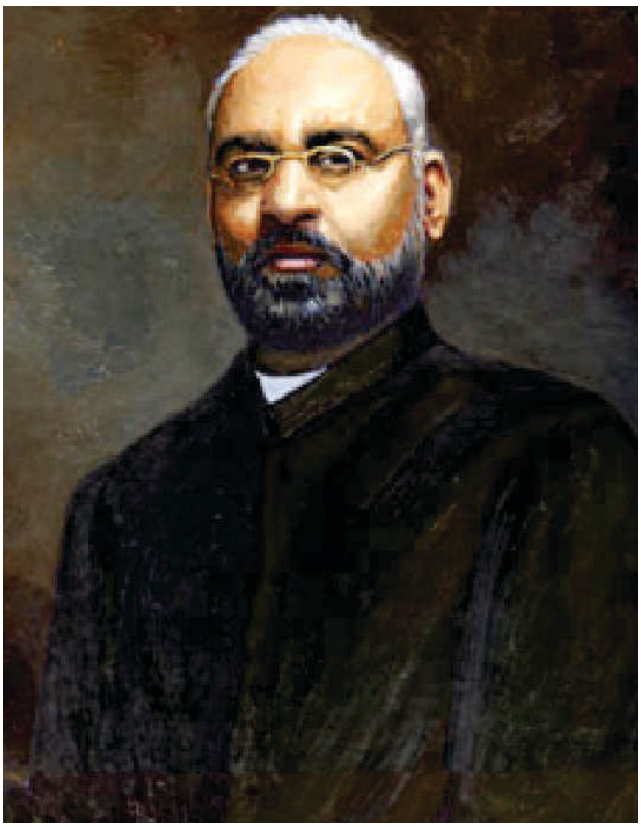

उन्होंने गांधीजी के भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में प्रवेश करने से बीस वर्ष पहले, 1905 में लंदन में भारत की अआज्दी के लिए प्रयास करने शुरू कर दिए थे। उन्होंने गांधीजी से भी 13 वर्ष पूर्व अपने समाचार पत्र में असहयोग आंदोलन के सिद्धांत का प्रचार किया था, जिसे उन्होंने असहयोग आंदोलन नाम दिया। उन्हें एक महान क्रांतिकारी पत्रकार, लेखक, स्वतंत्रता सेनानियों के निर्माता और भारतीय युवाओं के लिए के लिए प्रेरणादायक व्यक्तित्व के रूप में सदैव स्मरण किया जाएगा।

सहारनपुर की गौशाला में बना गोमय गुलाल, पीएम और सीएम तक पहुंचेगा रंग

होली खुशियों और रंगों का त्योहार है, लेकिन आजकल बाजार में मिलने वाले केमिकल रंग सेहत और पर्यावरण दोनों के लिए नुकसानदेह साबित हो रहे हैं। ऐसे में सहारनपुर की एक आत्मनिर्भर गौशाला ने होली को सुरक्षित और प्राकृतिक बनाने की दिशा में एक सराहनीय पहल की है। जी हां, सहारनपुर नगर निगम द्वारा संचालित मां शाकुंभरी कान्हा उपवन गौशाला ने इस बार होली के लिए खास गोमय गुलाल तैयार किया है। यह गुलाल पूरी तरह से प्राकृतिक चीजों से बनाया गया है, ताकि लोगों की सेहत सुरक्षित रहे और पर्यावरण को कोई नुकसान न पहुंचे। इस गुलाल को अरारोट, गाय का शुद्ध गोबर, पालक, चुकंदर और हल्दी जैसे नेचुरल रंगों से तैयार किया गया है। गौशाला ने इस वर्ष पाच रंगों भगवा, पीला, गुलाबी, हरा और लाल में गोमय गुलाल बनाया है। यह गुलाल केमिकल फ्री है, त्वचा और आंखों के लिए सुरक्षित है और पूरी तरह से बायो-डिग्रेडेबल भी है। यानी होली खेलने के बाद यह प्रकृति को कोई हानि नहीं पहुंचाता। यह गौशाला प्रदेश की पहली ऐसी आत्मनिर्भर कान्हा गौशाला है, जो गोमय गुलाल का व्यावसायिक उत्पादन कर रही है। इसका मुख्य उद्देश्य श्रद्धा के साथ स्वच्छता और पर्यावरण संरक्षण को जोड़ते हुए गौशाला को आत्मनिर्भर बनाना है। गौशाला प्रभारी और पशु चिकित्सा कल्याण अधिकारी डॉ. संदीप मिश्रा के अनुसार, इस गुलाल की मांग शहर के साथ-साथ ऑनलाइन भी तेजी से बढ़ रही है। इसी वजह से गौशाला में बड़े पैमाने पर गुलाल तैयार किया जा रहा है। अभी तक करीब तीन क्विंटल गुलाल बनाया जा चुका है। यह गुलाल 100 ग्राम और 200 ग्राम के आकर्षक पैकेट में उपलब्ध है, जिसकी कीमत ₹40 से शुरू होती है। लोग इसे नगर निगम परिसर, शहर के प्रमुख स्थानों, गौशाला आउटलेट्स और ऑनलाइन प्लेटफॉर्म से भी खरीद सकते हैं। यह गुलाल फिलहाल पाँच राज्यों में बेचा जा रहा है और इसकी डिमांड लगातार बढ़ रही है। साथ ही यह गोमय गुलाल इस वर्ष भी नरेंद्र मोदी, द्रौपदी मुर्मु और योगी आदित्यनाथ सहित देश की कई प्रमुख हस्तियों को भेजा जाएगा। इस पहल से न केवल सुरक्षित होली का संदेश जा रहा है, बल्कि आत्मनिर्भर भारत और पर्यावरण संरक्षण की दिशा में भी एक मजबूत कदम उठाया गया है।

पर्यावरण संरक्षण में डॉ. आशुतोष पंत का योगदान

नैनीताल जिले के हल्द्वानी निवासी डॉ. आशुतोष पंत पिछले कई दशकों से पर्यावरण संरक्षण की दिशा में निरंतर कार्य कर रहे हैं। बिना किसी संस्था, फंड या प्रचार के उन्होंने अपनी निजी आय से अब तक 4 लाख 62 हजार 500 से अधिक पौधे लोगों में वितरित किए हैं। उनका उद्देश्य केवल पौधे बांटना नहीं, बल्कि लोगों के भीतर प्रकृति के प्रति जिम्मेदारी और संवेदनशीलता का भाव पैदा करना है। डॉ. पंत गांव-गांव, स्कूलों और सामाजिक कार्यक्रमों में स्वयं पहुंचते हैं और लोगों को पौधारोपण के लिए प्रेरित करते हैं। वे हर व्यक्ति से यह संकल्प भी करवाते हैं कि लगाए गए पौधे की सुरक्षा, नियमित सिंचाई और देखभाल पूरी जिम्मेदारी के साथ की जाएगी। उनका मानना है कि पौधा तभी सार्थक होता है, जब वह जीवित रहकर पेड़ बने। उन्होंने वर्ष 1988 में आयुर्वेद चिकित्सक के रूप में अपनी सेवा शुरू की थी और उधम सिंह नगर जिले से जिला आयुर्वेद चिकित्साधिकारी पद से सेवानिवृत्त हुए। नौकरी के शुरुआती वर्षों में वे स्वयं पौधारोपण करते थे, लेकिन बाद में उन्होंने महसूस किया कि देखरेख के अभाव में कई पौधे नष्ट हो जाते हैं। इसी अनुभव से सीख लेते हुए वर्ष 1996 से उन्होंने लोगों को फलदार और उपयोगी पौधे भेंट करने का अभियान शुरू किया। आज उनके द्वारा वितरित किए जाने वाले पौधों में आम, आंवला, तेजपत्ता, सहजन, अखरोट सहित कई आयुर्वेदिक और उपयोगी वृक्ष शामिल हैं। उनका कहना है कि जब किसी पेड़ से फल और प्रत्यक्ष लाभ मिलता है, तो लोग उसे परिवार के सदस्य की तरह संजोकर रखते हैं, न कि काटते हैं।

इस पूरे अभियान की सबसे प्रेरक बात यह है कि इसके पीछे कोई आर्थिक सहयोग नहीं है। पहले वे अपने वेतन से और अब सेवानिवृत्ति के बाद अपनी पेंशन से पौधे खरीदकर दान करते हैं। हर साल इस कार्य में लगभग 5 से 6 लाख रुपये का खर्च आता है, जिसे वे पूरी तरह स्वयं वहन करते हैं। ■

लाल चावल ने बदली उत्तरकाशी के किसानों की किस्मत

उत्तराखण्ड के पहाड़ी क्षेत्रों में पारंपरिक रूप से उगाया जाने वाला लाल चावल अब अपनी खास पहचान बना रहा है। शुद्ध, पौष्टिक और जैविक तरीके से तैयार यह चावल न केवल स्थानीय लोगों की पसंद बन चुका है, बल्कि अब इसकी मांग राज्य की सीमाओं से बाहर भी तेजी से बढ़ रही है। बेहतर गुणवत्ता और स्वास्थ्य लाभों के कारण लाल चावल किसानों के लिए आमदनी का नया जरिया बनता जा रहा है। जी हां, उत्तरकाशी में उगाए जाने वाले लाल चावल की मांग अब उत्तराखण्ड के अलग-अलग जिलों से होते हुए उत्तर प्रदेश तक पहुंच गई है। अपने पोषण से भरपूर गुणों और जैविक खेती के कारण यह चावल बाजार में तेजी से लोकप्रिय हो रहा है। इस बढ़ती मांग से किसान और स्वयं सहायता समूह काफी उत्साहित नजर आ रहे हैं।

उधम सिंह नगर के रुद्रपुर में गांधी पार्क में चल रहे सरस कार्निवल मेले में लाल चावल की भारी मांग देखने को मिल रही है। यहां इसे खरीदने के लिए बड़ी संख्या में लोग पहुंच रहे हैं, खासकर शुगर के मरीज। मेले में लाल चावल की कीमत 150 से 200 रुपये प्रति किलो रखी गई है, फिर भी लोग इसे स्वास्थ्य के लिए फायदेमंद मानकर खरीद रहे हैं। पहाड़ी इलाकों में पारंपरिक तरीके से उगाया जाने वाला यह लाल चावल अब देश के अन्य राज्यों में भी अपनी पहचान बना रहा है। उत्तर प्रदेश के बाजारों से हाल ही में इसकी खास मांग सामने आई है। कृषि विशेषज्ञों के अनुसार, लाल चावल में आयरन, फाइबर और एंटीऑक्सीडेंट भरपूर मात्रा में पाए जाते हैं। यही वजह है कि डॉक्टर भी इसे सामान्य सफेद चावल की तुलना में ज्यादा लाभकारी बताते हैं। किसान बिना रासायनिक खाद और कीटनाशकों के जैविक पद्धति से इसकी खेती कर रहे हैं, जिससे इसकी गुणवत्ता और स्वाद बेहतर बना रहता है। बढ़ती मांग को देखते हुए स्थानीय स्वयं सहायता समूह और किसान अब इसकी पैकेजिंग और ब्रांडिंग पर भी ध्यान देने लगे हैं।

उत्तर प्रदेश के कई व्यापारी सीधे किसानों से संपर्क कर बड़ी मात्रा में लाल चावल की खरीद कर रहे हैं, जिससे किसानों को सही दाम मिल रहा है और बिचौलियों की भूमिका कम हो गई है।

किसान अवधेश कुमार की जैविक खेती की प्रेरक कहानी

कोरोना काल ने जब हजारों परिवारों की नौकरियां चली गई, तब कुछ लोग हिम्मत और मेहनत के सहारे नई राह बना रहे थे। बहजोई के गांव भोजपुर बिचौला के किसान और रिसर्चर अवधेश कुमार सिंह ने भी मुश्किल समय में हार मानने के बजाय मिट्टी से अपना रिश्ता और मजबूत किया। अवधेश कुमार की 65 हजार रुपये प्रतिमाह की नौकरी कोरोना काल में छूट गई। इसके बाद उन्होंने शहर छोड़कर गांव का रुख किया और देसी गाय आधारित जैविक तरल उर्वरक बनाने का प्रयोग शुरू किया। देसी गाय के दूध और दही से उन्होंने बीज अमृत, गो कृपा अमृतम और घन जीवा अमृत जैसे उत्पाद तैयार किए। शुरुआत के छह महीने काफी कठिन रहे। मेहनत ज्यादा थी और आमदनी नहीं के बराबर। लेकिन जैसे ही किसानों ने इन जैविक उर्वरकों का प्रयोग किया, नतीजे सामने आने लगे। जहां पहले गन्ने की पैदावार एक बीघा में 55द्60 क्विंटल होती थी, वहीं अब 110-120 क्विंटल तक पहुंचने लगी। बदायूं, अमरोहा और लखीमपुर खीरी के किसानों को इसका सीधा लाभ मिला। जैविक गन्ने की मांग बढ़ने से बड़े कारोबारी सीधे खेतों से खरीद कर कार्बनिक गुड़ बना रहे हैं। अवधेश अपने तरल उर्वरक

दो लीटर मात्र 50 रुपये में उपलब्ध कराते हैं, जिसे फसलों पर स्प्रे किया जाता है। आज वह लखीमपुर खीरी, बरेली, शाहजहांपुर, बदायूं, अमरोहा, बिजनौर और संभल के करीब 470 किसानों को जैविक खेती से जोड़ चुके हैं। आज उनकी सालाना आय 55 से 60 लाख रुपये तक पहुंच चुकी है और उनकी कहानी यह सिद्ध करती है कि सही सोच और मेहनत से संकट को भी अवसर में बदला जा सकता है।

राजा बनकर हिन्दू लड़कियों को फंसाता था आवेश खान, हुआ गिरफ्तार

पहचान छिपाकर हिन्दू समाज में घुसपैठ करना अब मजहबी जिहाद का खतरनाक हथियार बन चुका है। जी हां एक बार फिर ऐसा ही कुछ देखने को मिला है, मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल में, जहां हापुड़ के युवक ने अपनी पहचान छिपाकर पहले एक हिन्दू युवक से दोस्ती की और फिर उसकी बहन को प्रेम के जाल में फंसा लिया। बता दें आरोपी का नाम आवेश खान है। वह उत्तर प्रदेश के हापुड़ जिले का रहने वाला है और पिछले छह साल से भोपाल की एक फैक्ट्री में काम कर रहा था। फैक्ट्री में उसने अपनी असली पहचान छिपाकर खुद को 'राजा' बताया था। आवेश ने फैक्ट्री में काम करने वाले एक हिंदू युवक से दोस्ती की। बाद में उसने उसके जरिए उसकी 22 वर्षीय बहन से संपर्क किया और खुद को 'राजा' बताकर उससे प्रेम संबंध बना लिए। युवती को शुरुआत में लगा कि वह उससे सच्चा प्यार करता है। आरोप है कि युवक ने युवती के साथ शारीरिक संबंध बनाए और इस दौरान उसके आपत्तिजनक वीडियो भी बना लिए। जब युवती को उसकी असली पहचान का पता चला और उसने दूरी बनानी चाही, तो आरोपी ने उन वीडियो के जरिए उसे ब्लैकमेल करना शुरू कर दिया और वीडियो वायरल करने की धमकी देने लगा। डर और तनाव में आकर युवती ने अपने परिवार को पूरी बात बताई और कटारा हिल्स थाना पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है। आरोपी के मोबाइल की जांच में 40 अश्लील वीडियो मिले हैं, जिनमें पीड़िता के अलावा दो अन्य लड़कियों के वीडियो भी बताए जा रहे हैं। मोबाइल को फॉरेंसिक जांच के लिए भेज दिया गया है। पुलिस यह भी जांच कर रही है कि कहीं और भी पीड़िताएं तो नहीं हैं। पुलिस का कहना है कि आरोपी ने पहचान छिपाकर दोस्ती की, प्रेम संबंध बनाए और फिर ब्लैकमेल किया फिलहाल पूरे मामले की जांच जारी है।

मुस्लिम युवतियों ने हिंदू युवतियों से दोस्ती कर भाइयों से कराया दुष्कर्म

फिल्म 'केरला फाइल्स' की तर्ज पर मुस्लिम युवतियों द्वारा हिन्दू युवतियों को दोस्ती के झांसे में लेकर उन्हें शारीरिक शोषण के लिए मुस्लिम युवकों को सौंपने व मतांतरण का दबाव बनाने के सनसनीखेज मामले भोपाल में सामने आए हैं।

इस गिरोह से जुड़ी दो मुस्लिम महिलाओं और उनके चार साथियों के खिलाफ एफआईआर दर्ज कर पुलिस ने तीन आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस इस गिरोह में संलिप्त अन्य लोगों का पता लगाने का प्रयास कर रही है। अभी तक दो पीडिताएं सामने आई हैं, जिन्हें रोजगार के नाम पर मुस्लिम युवतियों ने अपने झांसे में लेकर अपने भाइयों और प्रेमी व अन्य रिश्तेदारों से दुष्कर्म कराया।

पुलिस ने आरोपी अमरीन खान उर्फ माहिरा, बिलाल, यासिर मतांतरित प्रेमी चंदन यादव और दोस्त चानू के विरुद्ध दुष्कर्म और मतांतरण का केस दर्ज कर लिया है। अब तक अमरीन, आफरीन और चंदन की गिरफ्तारी हो चुकी है। बागसेवनिया थाना प्रभारी अमित सोनी ने बताया कि इस गिरोह के बारे में पूरी पड़ताल की जा रही है।

पुलिस के अनुसार इस गिरोह की सरगना सागर रायल विला निवासी अमरीन खान उर्फ माहिरा शहर के आशिमा माल में संचालित एक स्पा सेंटर से जुड़ी हैं। पहली पीड़िता 30 वर्षीय

अमरीन खान। सौ. इंटरनेट मीडिया | मतांतरित युवक चंदन। सौ. इंटरनेट मीडिया | आफरीन। सौ. इंटरनेट मीडिया

युवती वर्ष 2024 में अमरीन के संपर्क में आई।

अमरीन ने उसे अपने घर पर बेबी सीटर की नौकरी पर रख लिया। पीडिता का आरोप है कि वहां अमरीन के प्रेमी हिंदू से मतांतरित होकर मुस्लिम बने चंदन यादव ने चाय में नशीला पदार्थ मिलाकर उससे दुष्कर्म किया।

बाद में अमरीन ने भी उसके साथ धोखा किया और जहांगीराबाद निवासी अपने दोस्त चानू के साथ अहमदाबाद ले जाकर अपने भाई यासिर के हवाले कर दिया। आरोपियों का अत्याचार यहीं नहीं थमा, अमरीन की बहन आफरीन और चंदन ने पीड़िता को नमाज पढ़ने तथ्सस बुर्का पहनने पर मजबूर किया। (साभार दैनिक जागरण)

मजहब की आड़ में छुपे दरिंदे

उत्तर प्रदेश के नोएडा से मजहबी मानसिकता का गंदा चेहरा सामने आया है। जी हां, सेक्टर–63 से एक बेहद दुखद घटना सामने आई है। यहां सातवीं कक्षा में पढ़ने वाली 13 वर्षीय हिन्दू छात्रा ने लगातार ब्लैकमेलिंग से परेशान होकर आत्महत्या कर ली। यह घटना न केवल एक परिवार के लिए अपूरणीय नुकसान है, बल्कि समाज में हिन्दू बेटियों के साथ हो रहे यह अपराध एक गंभीर सवाल भी खड़े करती है।

मामले की जानकारी देते हुए हिन्दू लड़की के भाई ने बताया कि पहले उसकी पहचान अंकुर ठाकुर नाम के युवक से हुई थी, जो लड़कियों को बहला–फुसलाकर गलत कामों में धकेलता था। जब यह बात सामने आई तो छात्रा ने उससे दूरी बना ली। इसके बाद जनवरी में अरबाज नाम के युवक ने उससे संपर्क किया। उसने हिन्दू लड़की के साथ गलत हरकत की, उसके फोटो और वीडियो बना लिए और फिर धमकाकर ब्लैकमेल करने लगा। वह उस पर अपने दोस्तों के साथ शारीरिक संबंध बनाने का दबाव भी डाल रहा था। उसका दोस्त समीर भी उसे परेशान कर रहा था।

आत्महत्या से पहले हिन्दू छात्रा ने अपनी डायरी में पांच पन्नों में अपनी पूरी पीड़ा लिखी। उसने साफ लिखा कि वह मरना नहीं चाहती थी, लेकिन फोटो और वीडियो के डर से मजबूर हो गई। डायरी में तीनों आरोपियों के नाम दर्ज हैं।

पुलिस ने डायरी के आधार पर POCSO एक्ट और अन्य धाराओं में केस दर्ज किया है। दो आरोपियों को गिरफ्तार किया जा चुका है, जबकि तीसरा आरोपी राजस्थान की जेल में बंद है। इस मामले को लेकर सख्त जांच की मांग की है। घटना के बाद इलाके में लोगों ने प्रदर्शन कर कड़ी कार्रवाई की मांग की।

देवभूमि उत्तराखण्ड में लव जिहाद का हैवानियत भरा चेहरा

उत्तराखंड के अल्मोड़ा में एक बार फिर हिन्दू बेटी जिहादी षड्यंत्र का शिकार बन गई जी हां, उत्तराखंड के अल्मोड़ा जिले के धौलादेवी ब्लॉक से एक सनसनीखेज मामले ने सामने आया है, जहाँ मुरादाबाद निवासी एक जिहादी ने 16 वर्षीय हिन्दू किशोरी के साथ दुष्कर्म की वारदात को अंजाम दिया। आरोपी सोहेल, उस वक्त घर में घुसकर किशोरी को अपनी हवस का शिकार बनाया जब उसके परिजन इलाज के लिए हल्द्वानी गए हुए थे। आरोप है कि आरोपी ने हिन्दू किशोरी की आपत्तिजनक फोटो खींचकर उसे सोशल मीडिया पर वायरल करने और जान से मारने की धमकी देकर बार–बार ब्लैकमेल किया। परिजनों की शिकायत के बाद दन्यां थाना पुलिस ने त्वरित कार्रवाई करते हुए 12 घंटे के भीतर आरोपी को चापड़ बैंड के पास से गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस ने आरोपी के खिलाफ पॉक्सो (POCSO) और बीएनएस की धाराओं में मामला दर्ज कर इलेक्ट्रॉनिक साक्ष्य जुटाने शुरू कर दिए हैं। इस घटना को लेकर ग्रामीणों में गहरा आक्रोश देखने को मिल रहा है। साथ हर किसी के मन में यह सवाल है कि आखिर कब तक हिन्दू बेटियां इन जिहादी षड्यंत्रो का शिकार बनती रहेगी।

कहानी : अमीरी

– डॉ. शुचि चौहान

वह कॉलेज के वार्षिकोत्सव की मस्ती भरी शाम थी। मंच रोशनी से नहाया हुआ था। एंकरिंग कर रही कविता की आवाज में ऐसा जादू था कि तालियां थमने का नाम नहीं ले रही थीं। कार्यक्रम के अंत में जब जाने माने रेडियो जॉकी रोहन– जिसकी आवाज की वह स्वयं दीवानी थी– ने उससे कहा कि "आप तो बिल्कुल प्रोफेशनल एंकर लगती हैं," तो बस यही वाक्य जैसे उस के भीतर दीये की लौ बन गया।

कविता ईवेंट मैनेजमेंट में डिप्लोमा कर रही थी और एक सफल एंकर व मॉडल बनना चाहती थी। कॉलेज के बाद वह मुंबई आ गई। धीरे धीरे विवाह समारोहों और इवेंट्स में एंकरिंग ही उसकी पहचान बन गई। कभी–कभी फैशन शो में रैम्प वॉक का अवसर भी मिल जाता था। पर कविता को प्रतीक्षा थी तो एक बड़े ब्रेक की।

दूसरी ओर मां को लगता था कि अब उसे घर बसा लेना चाहिए। वे कोई रिश्ता बतातीं तो कविता हँस देती और कहती– "माँ, अभी तो करियर की शुरुआत है। एक–दो बड़े प्रोजेक्ट मिल जाएं, फिर शादी भी कर लूंगी।" माँ उसे समझातीं– "बेटा! हर चीज की एक उम्र होती है, घर बसाने की भी, और माँ बनने की भी।"

कविता को लगता– माँ पुराने खयालों की हैं। विज्ञान ने इतनी प्रगति कर ली है कि बच्चे अब भगवान की देन नहीं रहे और सफलता जब कदम चूम रही हो, तो रिश्तों की भी कमी नहीं रहती। उसे भी कोई न कोई मिल ही जाएगा।

हां, 40 वर्ष की होते–होते कविता ने एग फ्रीज करवा लिए। समय बीतता गया। कविता को अब भी उस "एक" ब्रेक की प्रतीक्षा थी।

कुछ बड़े डायरेक्टरों से मिली, तो उन्होंने कहा– "थोड़ा समझौता करोगी तो रास्ता आसान हो जाएगा।" कविता को यह स्वीकार न था। अब वह 50 की हो चली थी, बालों में सफेदी झांकने लगी थी।

इसी बीच एक दिन माँ भी उसका बसा घर देखने की चाह लिए ही इस दुनिया से चली गईं। उस दिन पहली बार उसे अपना फ्लैट बहुत बड़ा और खाली लगा। उसे अकेलापन कचोटने लगा।

उन्हीं दिनों आकाश उसके जीवन में आया। कोर्ट मैरिज के बाद दोनों साथ रहने लगे। अब कविता माँ बनना चाहती थी। फिर चक्कर लगने शुरू हुए आईवीएफ सेंटर के। कई प्रयासों और आशा–निराशा के बीच 56 वर्ष की आयु में कविता ने दो जुड़वां बेटियों को जन्म दिया। उस दिन उसे लगा जैसे बरसों के सूखे के बाद आज बारिश हुई है। जब उसने बेटियों को पहली बार सीने से लगाया, तो लगा जैसे उस बारिश में वह अंदर से बाहर तक पूरी भीग गई है और जीवन में बेशुमार रंग बिखर गए हैं।

समय फिर बीतने लगा। घर में अब किलकारियाँ थीं। रौनक थी और रंग भी। लेकिन कविता का शरीर थकने लगा था। ब्लड प्रेशर, शुगर, घुटनों का दर्द आदि। रात को बच्चियों के रोने से कम, शरीर में जकड़न और क्रैम्प्स से अधिक नींद टूटती थी। आकाश भी बैंक से रिटायर हो गया था। लेकिन बेटियाँ अभी पाँच वर्ष की थीं। कविता को उनके भविष्य की चिंता सताती थी।

एक रात दोनों बच्चियाँ सो गईं तो कविता ने अपना डर व्यक्त करते हुए कहा– "आकाश! अगर हमें कुछ हो गया तो?"

आकाश ने उसका हाथ अपने हाथ में लेते हुए कहा– "मैंने कुछ सोचा है। हम एक ट्रस्ट बनाएँगे। कानूनी गार्जियन तय करेंगे। उन्हें अकेला नहीं छोड़ेंगे।"

कविता की आँखें भर आईं। उसे लग रहा था– वह ऐसा कैसे कर सकती है? उसने दो कितनी बड़ी गलतियां की हैं– पहले सिर्फ करियर के पीछे भागकर। और अब इस आयु में बच्चियों को दुनिया में लाकर।

अगली शाम जब वह बेटियों को सुला रही थी, तो वे बोलीं– "मम्मा, कहानी सुनाओ!" कविता ने कहानी शुरू की– "एक चिड़िया थी, जिसे उड़ना बहुत पसंद था।" इतना बोलने के साथ ही उसका गला रुंधने लगा। दोनों बच्चियाँ उससे लिपट गईं और बोलीं–"मम्मा, आप रो रही हो?" उसने जबरदस्ती चेहरे पर मुस्कान लाते हुए कहा–"नहीं, बेटा।"

दोनों को सुलाते सुलाते उसे माँ याद आ रही थीं– "हर चीज की एक उम्र होती है।" कविता ने मन ही मन माँ से क्षमा मांगी। वह अनुभव कर रही थी– जीवन में प्रसिद्धि और धन अर्जित करना ही सब कुछ नहीं होता, प्रसन्नता व पूर्णता का अहसास तो परिवार व इनके बीच सामंजस्य से ही होता है। वह पछता रही थी, लेकिन सजग भी थी।

उसने अगले ही सप्ताह गार्जियनशिप के पेपर तैयार करवाए। बेटियों की शिक्षा के लिए फंड बनाया। अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखना शुरू किया। अब वह सिर्फ एक महत्वाकांक्षी लड़की नहीं थी। वह दो धड़कनों का संसार थी। अब वह जब भी अपनी बेटियों को चिड़िया की कहानी सुनाती है, तो उसमें चिड़ा चिड़ी के साथ उनके दो–तीन बच्चे भी होते हैं। सब एक घोंसले में रहते हैं। चिड़ा दाना लेकर आता है, चिड़ी बच्चों की देखभाल करती है।

और कहानी सुनाते समय नन्हीं हथेलियाँ जब उसका चेहरा छूती हैं, तो उसे लगता है वह दुनिया की सबसे अमीर इंसान है।

बाल कहानी : धन नहीं चरित्र महान

– हर्ष शर्मा

एक देवी गांव में पति के साथ दूध की डेरी के काम में हाथ बंटाती थी। सारा परिवार जिसमें उसके ससुर और दो बच्चे भी थे। बड़े सुचारू रूप से परिवार का भरण पोषण हो रहा था, उम्र के हिसाब से ससुर गुजर गये। किन्तु कुछ समय पश्चात उसके पति भी गुजर गये तो उस पर बच्चों को पालने के साथ पढ़ाई का भी बोझ आ पड़ा। परन्तु यह विदुषी देवी जिसे अपने ससुर के कर्तव्य परायणता, व्यवहार कुशलता की उच्च शिक्षा मिली हुई थी घबराई नहीं। उसने कुछ भैसें और गऊयें बेचकर रुपये बैंक में जमा करा दिये। अच्छा खासा दूध देने वाली दो भैसें रख लीं उनके दूध से घी बनाकर बेचती थी, रोजाना ताजा लस्सी अड़ोस–पड़ोस के लोग ले जाते। उस देवी के गुण गाते, इससे उस देवी को बड़ी शांति मिलती। जब वह मक्खन से घी बनाती तो सारा मोहल्ला घी की सुगन्ध से महक उठता। यह महक उसकी साख बढ़ाती सब लोग उसके यहां से ही घी लेना पसंद करते। उसके बच्चों के साथ खेलने आते उनको "वेद चालीसा", बच्चों की शिक्षायें सुनाती। छोटे–छोटे बच्चे 'अनमोल–वचनों' के वाक्य याद कराती।

आने वाले बच्चे जब अपने घरों में जाकर शिक्षायें व अनमोल वचन सुनाते तो उनके माता–पिता बड़े खुश होते और जब भी थोड़ा खाली समय होता कहते जाओ घी वालों के बच्चों के साथ खेल आओ। वह देवी भी सब बच्चों को बड़ा प्याार देती। यों कह सकते हैं कि उस देवी ने ससुर की शिक्षाओं के अनुरूप घर को स्वर्ग बना रखा था। बड़ा बच्चा अभी जो दसवीं में आ चुका था अब उसका हाथ बंटाने लगा था।

एक दिन देवी ने जब बड़े बच्चे को दुकान से 2 किलो चीनी लेने को भेजा तो दुकानदार ने कहा बेटा नौकर को साथ लेते जाओ इसे दो किलो घी दे देना। वह बच्चा घर आया तो उसकी दो किलो चीनी को एक पलड़े में रख कर घी दे दिया। देवी ने देखा तो प्रसन्न हो गई कि अब कम से कम काम में हाथ बंटाने लायक हो गया है। कुछ दिन बाद जब देवी को दुकानदार के पास किसी काम से जाना पड़ा तो दो तीन ग्राहक खड़े थे। देवी को देखकर दुकानदार ने कहा देवी जी उस दिन जो मैंने घी मंगवाया था आधा पाव कम था। देवी बोली भैया वह तो लड़के ने बाट की जगह आपकी दो किलो चीनी रख कर ही तोल दिया था। यह सुनते ही दुकानदार के होश उड़ गये। जो दो तीन ग्राहक खड़े थे दुकानदार की तरफ नफरत से देख रहे थे। उसका पसीना छूट रहा था जैसे चोर चोरी करते कपड़ा गया हो। वह दिन में सोच रहा था कि वह ग्राहक जिससे भी यह बात बतायेंगी, बड़ी बेइज्जती होगी। बड़ी होशियारी और जीदारी से उनके सामने ही उसने क्षमा मांगी और व्रत लिया कि आज से कत नहीं तोलूंगा। साथ ही देवी जी का लाख–लाख धन्यवाद दिया कि देवी जी आप ने तो मुझे वह शिक्षा दी जो शायद कोई नहीं दे सकता था दोस्तो भाईयों, एक छोटी से घटना जीवन बदल सकती है।

कविता

विभिन्न प्रांत से होकर नदियां गिरें समुन्दर के दामन में
उसी तरह सब धर्म मिलें हैं भारत माँ के आंगन में
जय भारती जय भारती.....

सबकी अपनी स्वर लहरी है सबका अपना मीठापन
ऊँच नीच का भाव नहीं है सबमें दीखे अपनापन
अपनी भाषा अपना रुतबा अपनी अपनी शान यहाँ
विश्व पटल पर अलग दीखती भारत की पहचान यहाँ
सबका ही सम्मान छुपा है अपने धर्म सनातन में ।
विभिन्न प्रांत से होकर नदियां....

जब भी इसको पड़ी ज़रूरत सबने हाथ बढ़ाये हैं
उधम सिंह, अब्दुल हमीद, सुभाष, आज़ाद मुस्काये हैं
निज धर्मों से आगे आकर दिया वतन को मान यहाँ
मानवता से बड़ा धर्म नहीं, है अपनी पहचान यहाँ
यह सतरंगा रूप समाया इस भारत मन भावन में ।
विभिन्न प्रांत से होकर नदियां....

प्रथम किरण सूरज की आकर सुनती है अज़ान यहाँ
और प्रातः वेला में मन्दिर करते हैं रसगान यहाँ
यही बुद्ध की पावन भूमि गुरु ग्रंथ का उजियारा
कहीं स्वर्ग भी हो सकता क्या दुनिया में इससे प्यारा
जादू सा चमत्कार भरा है यहाँ की भूमि पावन में ।
विभिन्न प्रांत से होकर नदियां...

मंगलमय है जीवन सबका देश है यह त्यौहारों का
समता का संगम होता है प्रश्न कहाँ अधिकारों का
इसीलिये तो ऊपर वाला भारत भू पर आता है
और इसी कारण यह भारत देव भूमि कहलाता है
कितने रिश्ते नाते यहाँ पर फिर भी सब अनुशासन में।
विभिन्न प्रांत से होकर नदियां....

मीडिया में केशव संवाद पत्रिका

नवोत्थान के नए क्षितिज पर मंथन, सांस्कृतिक चेतना में जागृति

स्वास्तिक सहारा संवाददाता

नोएडा। प्रेरणा शोध संस्थान न्यास के तत्वावधान में सेक्टर-62 स्थित राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान में आयोजित प्रेरणा विमर्श मे देश के मीडियाकर्मियों, विचारकों और विभिन्न विषयों के विशेषज्ञों ने ...

भारतीयता में आध्यात्म का मूल : मनोज जोशी

...ज का बुलेटिन

साहित्य, समाज और मीडिया एक दूसरे के प्रर्याय- डाक्टर नीलम कुमारी

नोएडा (एजेन्सी) । प्रेरणा शोध संस्थान न्यास द्वारा प्रकाशित केशव संवाद पत्रिका के मार्च अंक साहित्य, समाज और मीडिया का आनलाइन विमोचन किया गया। विमोचन कार्यक्रम में रायबरेली उत्तर प्रदेश की विधायक अदिति सिंह, केशव संवाद पत्रिका की प्रमुख डाक्टर प्रियंका सिंह, केशव संवाद पत्रिका के संपादक मंडल की सदस्य डाक्टर नीलम कुमारी व केशव संवाद पत्रिका के इस अंक की संपादक डाक्टर उर्विजा शर्मा ...

... बहुत जरूरी है।

इस अवसर पर कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रही डाक्टर प्रियंका सिंह ने कहा कि साहित्य से राष्ट्र की गरिमा, उसकी संस्कृति, उसकी सभ्यता, उस राष्ट्र की प्राचीन परंपरा, रहन-सहन आदि सभी की जानकारी हमें प्राप्त होती है। मानव के विकास में साहित्य का योगदान अहम है। मानव का भौतिक विकास तो स्वभावत ही हो जाता है लेकिन उसके बौद्धिक विकास के लिए ...

आतंकवाद की जननी: राकेश सिन्हा

श्रीमती बिंदु मिश्र ने मीडिया में राष्ट्रवाद के पक्ष को मजबूत करने पर बल दिया।

केशव संवाद विशेषांक के बारे में

बताना प्रासंगिक होगा कि 48 पेज की यह पत्रिका देश की सेकुलर पत्रकारिता की पक्षपाती मीडिया नीति पर केंद्रित है। आद्योपांत सभी लेख इसी सेकुलर पत्रकारिता के ईर्द-गिर्द लिखे गये हैं। प्रसार भारती के अध्यक्ष ए सूर्य प्रकाश, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र के अध्यक्ष राम बहादुर राय ...

केशव की भूमि है आत्मनिर्भर उत्तर प्रदेश: डॉ. महेन्द्र सिंह

■ केशव संवाद पत्रिका के विशेषांक आत्मनिर्भर उत्तर प्रदेश का हुआ विमोचन

शाह टाइम्स संवाददाता

नोएडा। प्रेरणा शोध संस्थान न्यास के तत्वावधान में प्रकाशित मासिक पत्रिका केशव संवाद के विशेषांक ...

Dr. Mahendra Singh · Follow

3 October 2021 ·

गौतमबुद्ध नगर (नोएडा) में केशव संवाद मासिक पत्रिका के विशेषांक "आत्मनिर्भर उत्तर प्रदेश" के विमोचन कार्यक्रम में मा.प्रधानमंत्री श्री Narendra Modi जी की प्रेरणा एवं मा.मुख्यमंत्री श्री MYogiAdityanath जी के नेतृत्व में आत्मनिर्भर बनते उत्तर प्रदेश के बारे में चर्चा की।

केशव की भूमि है आत्मनिर्भर उत्तर प्रदेश : डॉ. महेंद्र सिंह

नोएडा। सेक्टर-12 स्थित भाऊराव देवरस सरस्वती विद्या मंदिर में रविवार को प्रेरणा शोध संस्थान न्यास के तत्वावधान में प्रकाशित मासिक पत्रिका 'केशव संवाद' के विशेषांक का विमोचन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के तौर पर गौतमबुद्ध विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. भगवती प्रकाश शर्मा और मुख्य वक्ता के रूप में प्रदेश के जल शक्ति मंत्री डॉ. महेंद्र सिंह मौजूद रहे।

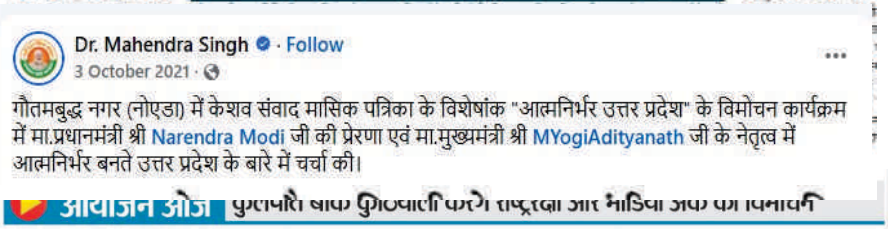

मंत्री डॉ. महेंद्र सिंह ने कहा कि आज हम 'केशव संवाद' के विशेषांक आत्मनिर्भर उत्तर प्रदेश का विमोचन कर रहे हैं। द्वापर में केशव जब धरती पर आए तो उन्होंने उत्तर प्रदेश को ही चुना। वहीं, प्रो. भगवती प्रकाश शर्मा ने कहा कि आत्मनिर्भरता की दृष्टि से प्रदेश सरकार की 'एक जिला एक उत्पादन योजना' सराहनीय है। कार्यक्रम में उत्तर महिला आयोग की अध्यक्ष विमला बाथम और प्रेरणा शोध संस्थान न्यास की उपाध्यक्ष प्रीति दादू भी मौजूद रहीं। अतिथियों ने पत्रिका के संपादक मंडल डॉ. प्रदीप

कार्यक्रम में जल शक्ति मंत्री डॉ. महेंद्र सिंह

सरस्वती विद्या मंदिर में मासिक पत्रिका 'केशव संवाद' के विशेषांक का विमोचन

कुमार (असिस्टेंट प्रोफेसर, इतिहास विभाग, सत्यवती कॉलेज सांध्य डीयू), डॉ. अखिलेश मिश्र (एसोसिएट प्रोफेसर, विभागाध्यक्ष (अर्थशास्त्र) शंभुदयाल पीजी कॉलेज, गाजियाबाद) डॉ. प्रियंका सिंह (असिस्टेंट प्रोफेसर, अर्थशास्त्र, शंभूदयाल पीजी कॉलेज, गाजियाबाद), डॉ. नीलम कुमारी (विभागाध्यक्ष, अंग्रेजी विभाग, किसान पीजी कॉलेज, सिंभावली, हापुड़) को सम्मानित किया गया। ब्यूरो

आयोजन आज | कुलपति बीके कुठियाला करेंगे राष्ट्रक्षा और मीडिया अंक का विमोचन

केशव संवाद ने दिखाया सेकुलर मीडिया को आईना

एक दर्जन पत्रकारों ने चलायी है पैनी कलम

« सुभाष सिंह। नई दिल्ली

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की विचारधारा से जुड़े प्रेरणा मीडिया नैपुण्य संस्थान की पत्रिका केशव संवाद का जुलाई का विशेषांक (राष्ट्ररक्षा और मीडिया) विमोचन के लिए तैयार है। माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता विवि (भोपाल) के कुलपति प्रो. बीके कुठियाला और राष्ट्रवादी चिंतक तथा भारत नीति

...रता ही आतंकवाद को दे रही जन्म

...यूरो)। इस्लामी कट्टरता से भारत को ही नहीं, बल्कि पूरे ... खतरा है। कट्टरता ही आतंकवाद को जन्म दे रही है। इस

NIRALA WORLD

Nirala Gateway

Sector 12, Greater Noida (W).

RETAIL | OFFICE | STUDIO APARTMENTS

Project Id: (UPRERAPRJ531916/06/2025)
Registration Date: 17-06-2025
Promoter Name: Parth Builtech Private Limited
Promoter Id: (UPRERAPRM348231)
Website: https://www.up-rera.in/projects